बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

मई, 1989

रु. 4.00

स्वाधीन जैन, छह वर्ष, विदिशा

मधुरम मेहता, शामगढ़

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 4 अंक 11 मई, 1989

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही

कला
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा

एक प्रति : चार रुपए
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए

डाक खर्च मुफ्त

चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।

कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता :
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कालोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.).

कागज़ : 'यूनिसेफ' के सौजन्य से
सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद् (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)

इस अंक में...

मेरा पन्ना	*2*
कविता - कैसे कैसे पैर	*8*
मारी क्यूरी - 4	*10*
अपनी प्रयोगशाला	*15*
खतरा स्कूल : भाग - नौ	*17*
कविता - कौन	*22*
माथा पच्ची	*24*
कहानी : अनिल का भूत	*26*
खेल कागज़ का	*31*
गिजु भाई की कलम से	*32*
लटोरा	*34*
खेल खेल में	*35*
बंदर गोष्ठी	*36*

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

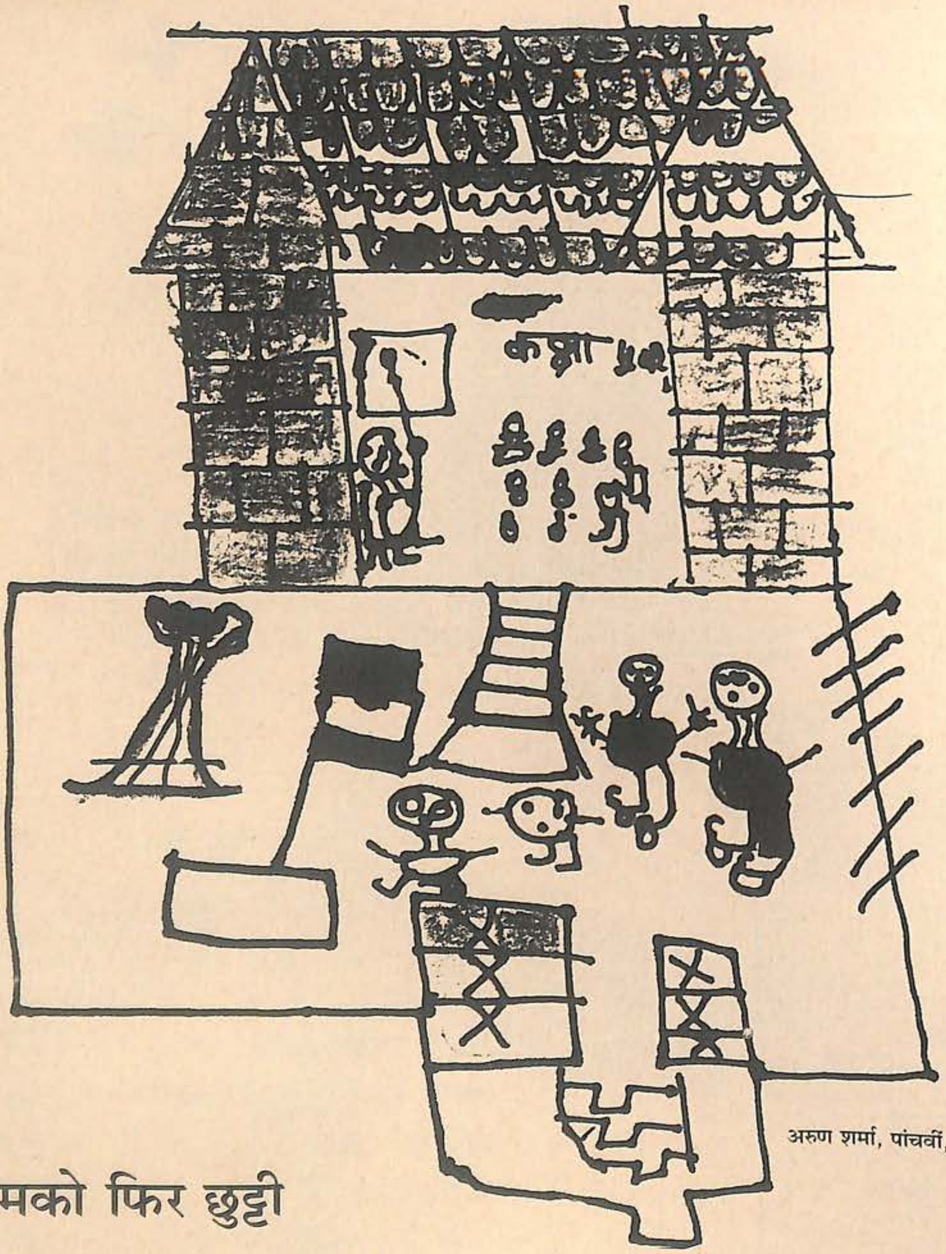

अरुण शर्मा, पांचवीं, हरदा

हमको फिर छुट्टी

सोम, सोम, सोम
हमारी टीचर गई रोम
हमको फिर छुट्टी

मंगल, मंगल, मंगल
हमारी टीचर गई जंगल
हमको फिर छुट्टी

बुध, बुध, बुध
हमारी टीचर का हो गया युद्ध
हमको फिर छुट्टी

वीर, वीर, वीर
हमारी टीचर ने बनाई खीर
हमको फिर छुट्टी

शुक्रवार, शुक्रवार, शुक्रवार
हमारी टीचर पड़ गई बीमार
हमको फिर छुट्टी

रवि, रवि, रवि
हमारी टीचर बन गई कवि
हमको फिर छुट्टी

☐ तोनिमा मुकर्जी, दस वर्ष, इटारसी।

इन चित्रों के आधार पर एक छोटी सी कहानी लिखो और हमें भेज दो। कुछ कहानियां हम प्रकाशित करेंगे।

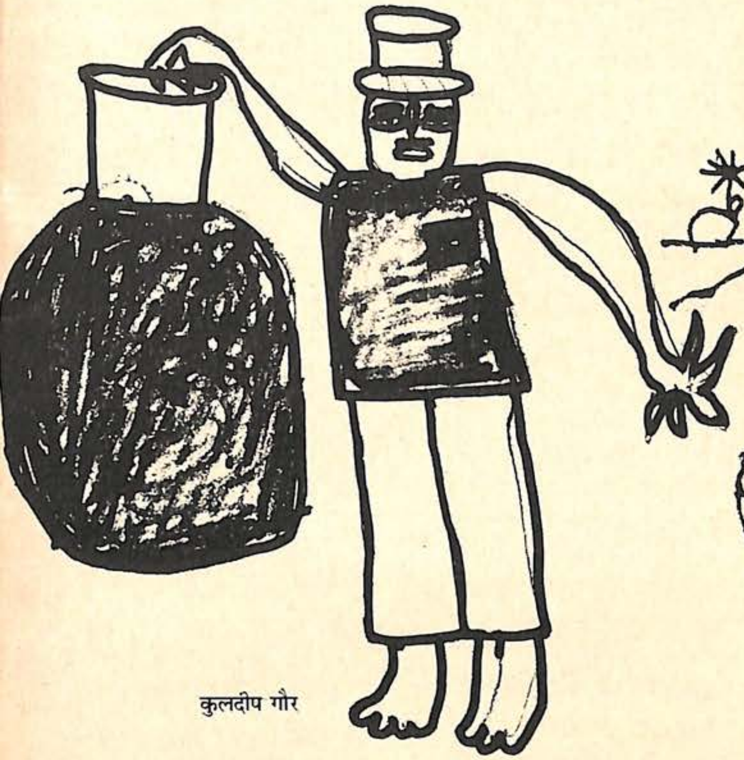

कुलदीप गौर

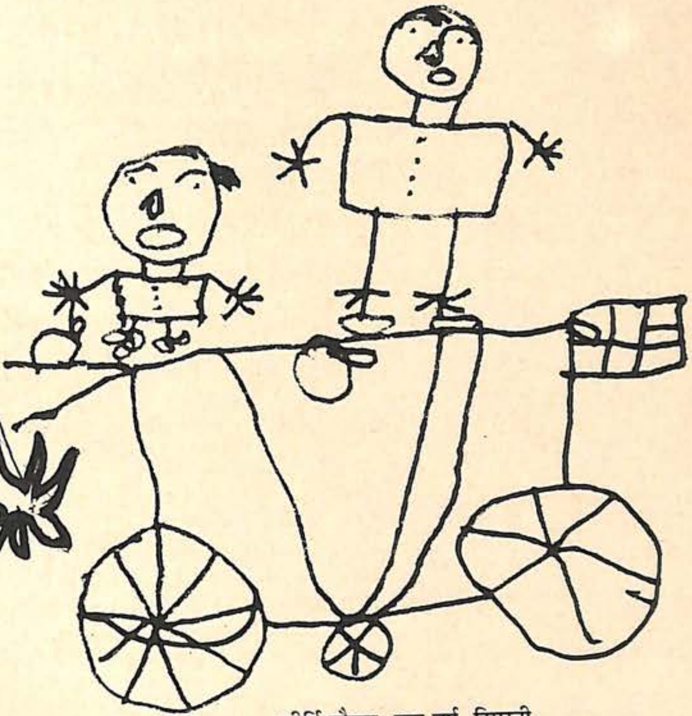

कीर्ति चौहान, चार वर्ष, टिमरनी

आरती चौहान, पहली, टिमरनी

ऋतु सहगल, सात वर्ष, नई दिल्ली

अमरूद खाए छककर

बात उन दिनों की है जब मैं कक्षा पांचवीं का छात्र था और तवानगर में पढ़ता था। दो पिरियेड की छुट्टी की घंटी बजी। मेरे साथी (सीताराम, जितेन्द्र) और मैं कक्षा से बाहर आए। उस स्कूल के पीछे एक अमरूद का बगीचा था। स्कूल और बाग के पीछे एक कच्ची दीवार छाती भर ऊंची थी। सीताराम बाग की ओर जा रहा था, वह लपककर दीवार पर चढ़ गया। वह अमरूदों को देखकर खुश होता हुआ बोला, आओ, आओ देखो कितने अच्छे अमरूद हैं। वह बोला—यह तो मेरे मामू का बाग है न, जल्दी-जल्दी चले आओ। जितेन्द्र भी कूदकर दीवार फांद गया। बोला, वाह-रे-वाह आज हम अमरूद खाएंगे, कितना मज़ा आएगा। उसने मुझे भी बुला लिया उसी के पीछे मैं भी चला गया।

कच्चे-पके अमरूद देखकर मेरे मुंह में पानी आ गया। बस एक ही डर था कि कहीं पकड़े न जाएं, लेकिन सीताराम ऐसे झमेले-चुटकियों में सुलझाता था। उसके साथ होने पर डर किस बात का। सो मैं भी दीवार कूदकर बाग में घुस गया। चारों तरफ अमरूदों से लदे पेड़ ही पेड़ थे और कच्चे-पके अमरूदों से लदे हुए थे। सीताराम ने तो पके-पके अमरूद तोड़ कर खाना प्रारंभ कर दिया। मगर मैं और जितेन्द्र कच्चे अमरूदों पर ही हाथ साफ करने लगे। मुझे कच्चे अमरूद बहुत भाते हैं किंतु कभी इतने न मिलते कि पेट भर खा सकूं। उस दिन मुझे अच्छा मौका था। खाता भी जा रहा था और जेबों में भी भरता जा रहा था, सोचा, कक्षा में जाकर सबको बता-बताकर खाएंगे। मेरे विचारों की कड़ी सीताराम के चिल्लाने से टूट गई। वह चिल्ला रहा था, जितेन्द्र, कमलेश भागो, भागो, चौकीदार आ रहा है। एक पेड़ की ऊंची डाल पर बैठे हुए मैंने भी चौकीदार को देखा, लंबा-चौड़ा, भारी एक आदमी हमारी तरफ आ रहा था। उसके हाथ में एक मोटा डंडा था उसे वह बार-बार धरती पर ठोंकता हुआ हमारे पीछे दौड़ रहा था। सीताराम और जितेन्द्र लपककर नीचे उतरे, वे भागे तो चौकीदार बहुत ज़ोर से उनके पीछे भागा। वह चिल्लाता जा रहा था, चोर हैं चोर, पकड़ो, भाग न जाए। मैं भी अवसर देखकर नीचे कूदा और वहां से भाग खड़ा हुआ। सीताराम और जितेन्द्र काफी आगे निकल गए थे। मैं भी बहुत तेजी से उनके पीछे भाग रहा था। इस

स्वाति स्याग, छह वर्ष, देवास

भाग दौड़ के कारण अमरूद मेरी जेबों में से निकलकर इधर-उधर ढुलक गए। चौकीदार भी अब सीताराम और जितेन्द्र को छोड़कर मेरे पीछे भागने लगा। इतने में वे दोनों दीवार फांदकर उस तरफ निकल गए। सीताराम चिल्लाता रहा, कमलेश तेज भागो, जल्दी-जल्दी भागते आओ, देखो कहीं चौकीदार तुम्हें पकड़ न ले। तब तक इधर उधर के कुछ लड़के भी मेरे पीछे लग गए। मैं पागलों की तरह भागता जा रहा था, सामने दीवार दिखाई दी तब मेरी जान में जान आई। सीताराम भागता-भागता चिल्लाता जा रहा था। मैंने भी जोर की छलांग लगाई और दीवार पर चढ़ गया। तभी जेब से आखिर अमरूद भी निकलकर नीचे गिर गया। मुझे बहुत पछतावा आया, इतनी मेहनत के पश्चात् कम-से-कम एक अमरूद तो बचना ही चाहिए था। अमरूद उठाने के लिए मैं दीवार से नीचे कूद पड़ा, मैंने अमरूद उठा लिया और फिर दीवार पर चढ़ने के लिए उछला। बस अब दीवार और फिर उस तरफ स्कूल था ही। इतने में ही चौकीदार बिलकुल निकट आ पहुंचा। कुछ जल्दबाजी और कुछ घबराहट से मैं दीवार से फिसल कर नीचे आ पहुंचा। दुबारा छलांग लगाने पर ही चौकीदार ने मुझे धर दबोचा। मैंने बहुत हाथ-पैर मारे लेकिन वह मुझे पीठ पर लाद कर चल दिया और मुझे बाग के मालिक के पास ले गया।

मालिक वहीं पर रखी एक मेज पर बैठा था। माली उसके सामने मुझे ले जाकर बोला, मालिक यह लड़का बड़ा शैतान है, दोस्तों को लेकर बाग में घुस आता है। ये लड़के अमरूद खाते भी हैं और उससे अधिक बर्बाद करते हैं। मालिक चुपचाप बैठा रहा। मैंने उसे चुपके से देखा, वह बड़ा कठोर व्यक्ति नज़र आ रहा था। मुझे लगा कि यह तो मार-मारकर मेरी हड्डी-पसली एक कर देगा। मुझे डर भी लग रहा था और शर्म भी आ रही थी। उसने घूरकर मेरी तरफ देखा। फिर मेज से उठा। मैं थर-थर कांपने लगा। मेरे पास आकर वह पूछने लगा। क्या नाम है तुम्हारा? मैंने कहा—मेरा नाम कमलेश है। मैं इसी स्कूल में पढ़ता हूं। उसने फिर पूछा—तुम्हें अमरूद अच्छे लगते हैं? मैंने स्वीकृति में सिर हिला दिया, फिर उसने अपने साथियों के नाम बताने को कहा। सीताराम और जितेन्द्र दीवार से उचक उचक कर मेरा तमाशा देख रहे थे। मैंने उनकी तरफ इशारा कर दिया। मालिक ने चौकीदार से कहा—जाओ एक टोकरी में बड़े-बड़े अमरूद भर लाओ। यह तो अच्छा लड़का है। ये लड़के चोर नहीं हो सकते। मालिक ने मेरे साथी सीताराम और जितेन्द्र को भी इशारे से बुलाया, पर वे अपनी जगह पर मूर्तिवत खड़े रहे। तब उसने मुझसे कहा, अपने दोस्तों को भी बुला लो। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि ये मेरे मित्रों को और क्यों बुलाना चाहते हैं? लेकिन मैंने उसकी आज्ञा का पालन किया। मेरे बुलाने पर सीताराम और जितेन्द्र भी नीचा सिर करके वहां आ गए। इतने में ही चौकीदार एक बड़ी टोकरी अमरूदों से भरकर ले आया। मालिक हम लोगों की तरफ देखकर बोला, लो यह टोकरी ले जाओ और खूब छककर खाओ, बेटा शरमाना नहीं। जेब में हाथ डाले मैं भौचक्का सा खड़ा देख रहा था। सीताराम और जितेन्द्र भी विस्मित होकर उस व्यक्ति की तरफ देख रहे थे। वह हमारी हालत देखकर बहुत ही प्यार से बोला, तुम सब तो मेरे अच्छे बच्चे हो। यह बाग अपना ही समझो, फिर भला इसमें चोरोंकी तरह घुसने से क्या मतलब? आराम से आकर चौकीदार से कहो, वह तुम्हें अच्छे-अच्छे अमरूद तोड़कर दे देगा।

हमारी जान में जान आई। हम तो यह समझ रहे थे कि यह हमारी हड्डी पसली तोड़ देगा। उसने फिर दुबारा कहा अमरूद खा लो, फिर हमने कुछ अमरूद उठाये। उसने स्वयं उठकर अमरूदों से हमारी जेबें ठसाठस भर दीं। बोझ से हम सीधे चल भी नहीं पा रहे थे, अब तो मौज ही मौज। भला अब चोरों की तरह ज़रूरत ही कहां। मगर वह दिन और उन अमरूदों का स्वाद मैं आज तक भी भूल नहीं पाया और न कभी भूलूंगा।

☐ कमलेश कुमार बेलवंशी, आठवीं, मुरलीढाना, पिपरिया (बालचिरैया)

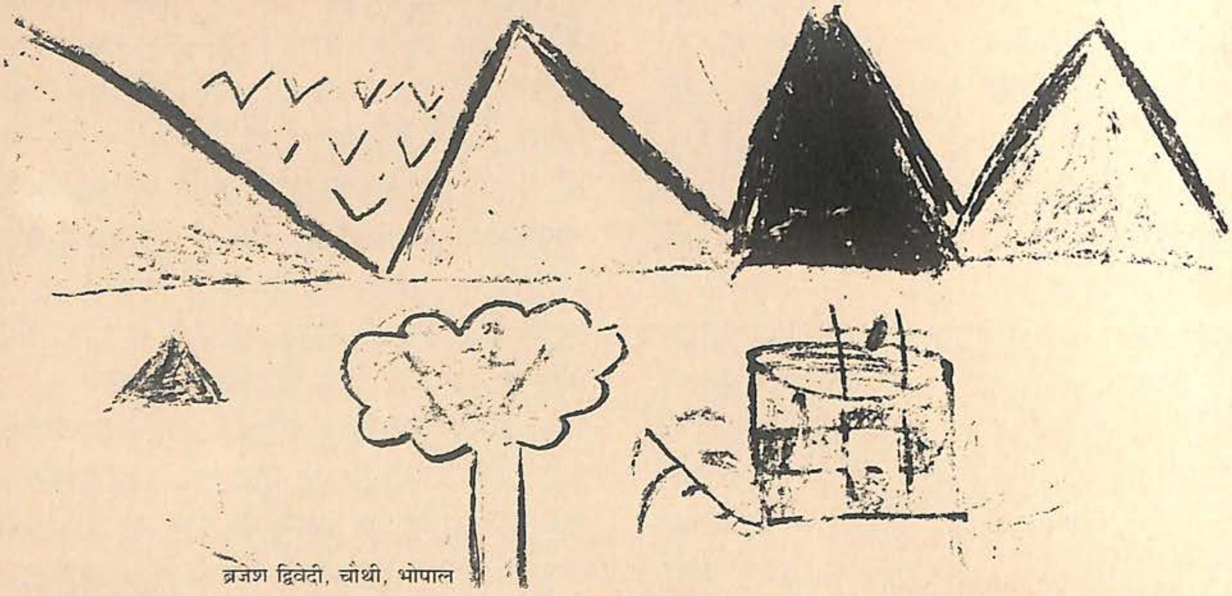

ब्रजेश द्विवेदी, चौथी, भोपाल

बाल्टी गिरी कुंएं में

एक लड़की पानी भरने गई। उसकी बाल्टी कुंएं में गिर गई, अब वह बहुत घबड़ा गई और धीरे-धीरे घर पहुंची। हिम्मत करके मम्मी के पास पहुंची। मम्मी बोली, क्यों रे बाल्टी कहां रख दी। तो लड़की ने बताया कि बाल्टी तो कुएं में गिर गई।

उसकी मम्मी का चेहरा तो देखने लायक हो गया। लड़की यह देख कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। इस पर मम्मी ने और गुस्से में आ कर उसको एक डंडी से पीटना शुरू कर दिया।

मैं कहती हूं कि क्या पीटने से बाल्टी निकल आई?

☐ महेन्द्रसिंह डोडिया, चौथी, अरलावदा, देवास
(बालकलम)

सट्टा की दुकान

चित्र : सत्य नारायण, पांचवीं, बालाबुड़ा, मंदसौर।

एक बार मेरे पिताजी ने मुझे पान लेने भेजा। मैं बाज़ार गया और एक गुमटी के सामने खड़ा हो गया। वहां बहुत भीड़ थी। मैं खड़ा रहा। भीड़ छटी तो आगे बढ़ा कहा, भैया एक पान देना, दुकान वाला बोला, यहां सट्टा लिखाता है, फिर बाजू वाली गुमटी में गया कहा, एक पान देना। उसने कहा, अरे सट्टा लिखाना हो तो बोलो। कहीं से मेरे चाचा ने देख लिया, बुलाया और दो थप्पड़ दिए। सट्टा खेलने लगा। घर चलो, आता हूं फिर बाताऊंगा। घर गया। पिताजी से कहा, चौराहे पर सब जगह सट्टा लिखते हैं। पान कोई नहीं बेचता। पिताजी ने भी दो थप्पड़ मारे, साले सट्टे वाली जगह क्यों गया।

☐ आर. कुमार, आठवीं, पिपरिया
(बालचिरैया)

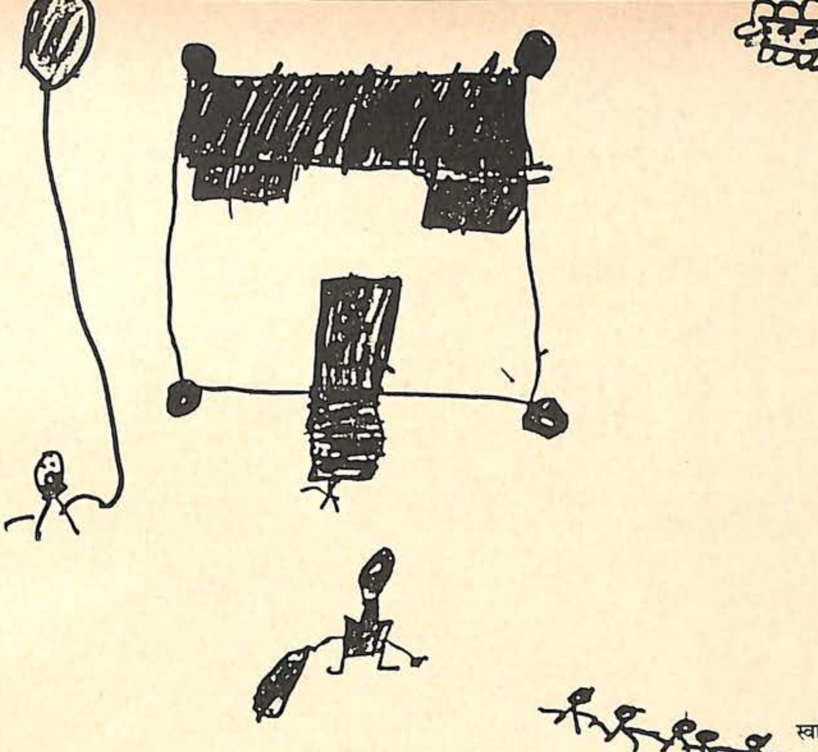

स्वाति स्याग, देवास

सांप मारा, महूक तोड़ी

एक दिना की बात है कि हमारे पांच दोस्त और हम, एक का नाम बड्डासिंह गूजर दूसरे का नाम हल्ला ठाकुर और तीसरे का नाम छुटलसिंह अहिरवार था और चौथे का नाम रघुनंदनदास बैरागी था और पांचवे का नाम राकेश कुमार शर्मा था और हमारा नाम अर्जुनसिंह पटैल।

तो हम छह दोस्त स्कूल जा रहे थे। हम लोग एक किलोमीटर दूर पहुंच गए थे तो हल्ला ठाकुर बोला आज हम स्कूल नहीं जाएं। तो छुटल बोला क्यों नहीं जाएं। तो हल्ला ठाकुर बोला कि आज हम सगोनी है जेहें। तो हम बोले कि किसलिए जाएगा। तो हल्ला बोला हम महूक तोड़कर खाएंगे। तो हम सबने सलाह करी कि अपन भी चलेंगे। तो छुटल बोला हमारे घर नहीं कहना, तो हम चलेंगे। नहीं तो हम नहीं जाएं। हमने कही हम नहीं कहेंगे। तो छुटलसिंह तैयार हो गया। तो सब रिंगने लगे। हल्ला ठाकुर आगे रिग रहा था। छुटका ने पीछे फिरकर देखा तो पीछे से सांप आ रहा था तो छुटल दौड़कर हल्ला ठाकुर से झूम पड़ा। तो हल्ला बोला कायरे काय झूम पड़ा। छुटल बोला अरे सांप आ रहा है। जैसेई छुटल ने कहा कि सांप आ रहा है तो हम पूरे और हल्ला से झूम पड़े। जब हल्ला बोला मुझसे अलग हो जाव तो हम सब अलग हो गए। राकेश गया तो लाठी तोड़ लाया और हल्ला को दे दी। हल्ला ने जब लाठी मारी तो सांप के मुंह में लगी। सांप एकई में मर गया। फिर हल्ला बोला चलो अब चलिए। तो हम सब चलने लगे।

एक सागौन के पेड़ में महूक मिल गई। तो हल्ला बोला दो जन चढ़ जाओ। तो मैं और राकेश चढ़ गए। तो महूक जैसई उबराई है और उसने हमें काट खाया। तो हम उतर आए। फिर बड्डा, छुटल और रघुनंदन चढ़ गए तो उनने जानके महूक को उबरा दई। तो उनको भी चीथ खाया, तो वे भी उतर आए। हल्ला बोला राकेश मांवर बावरी ले आओ। तो राकेश ने मांवर बावरी ले आनी और हल्ला को देदी। हल्ला ने पूरे शरीर में मस कर चढ़ गया। हल्ला ने जाकर महुक को उबरादई। फिर शहद वाली लकड़ी तोड़कर नीचे फेंक दई। छुटल ने उसको झेल लई। फिर हल्ला नीचे उतर आया। सबने शहद खाई और एक नाला बह रहा था जिसमें हाथ धोए और हल्ला की पीठ ठोकी और खुशी मनाई।

☐ अर्जुनसिंह पटैल, आठवीं, जमुनियां, होशंगाबाद

कैसे कैसे पैर
देखो, करते हैं सैर

बायां पैर , दायां पैर
बायें दायें , दायें बायें
पैर ही पैर

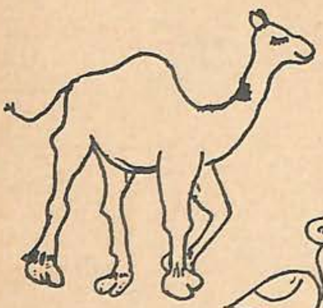

बड़े पैर , छोटे पैर

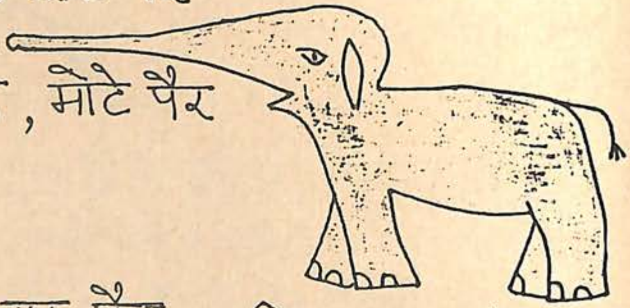

पतले पैर , मोटे पैर

दो पैर , चार पैर
छः पैर , आठ पैर

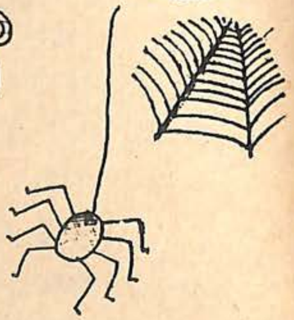

अरे रे रे रे रे रे रे
एक सौ साठ पैर!

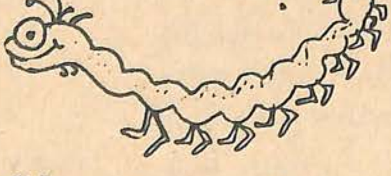
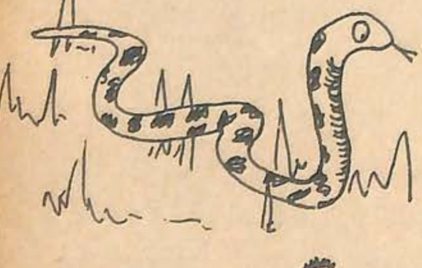

(और, भैया खोजना तो
साँप के कितने पैर?)

कीचड़ में सने पैर
साफ साफ धुले पैर

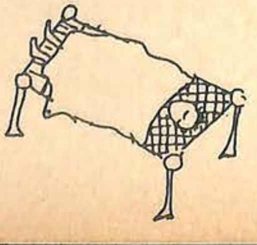

सुबह को दौड़ लगाते
रात को सोते पैर

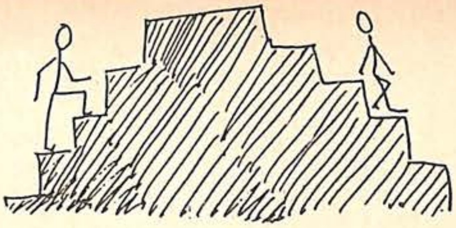
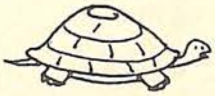
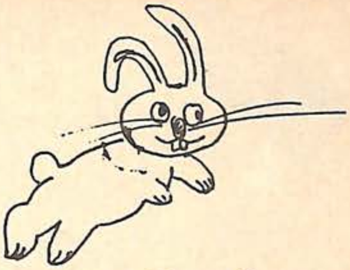

धीमे पैर, तेज़ पैर
चढ़ते पैर, उतरते पैर
अरे भैया! देखो देखो
चिड़िया के सिर-पर-पैर

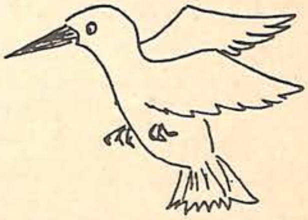

कैसे कैसे पैर
देखो, करते हैं सैर

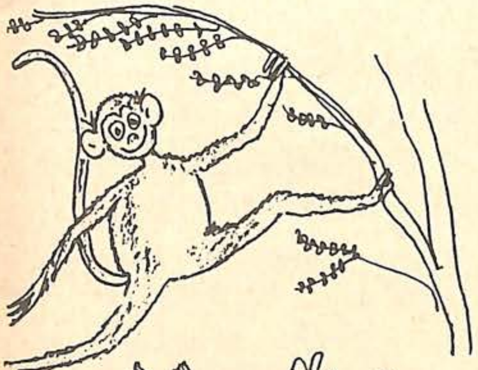
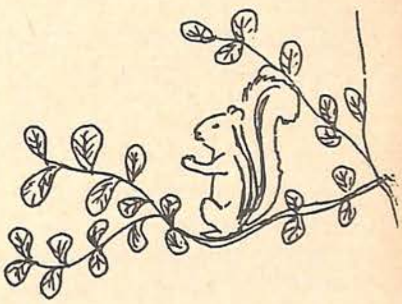

डाल डाल उछलते पैर
पात पात फुदकते पैर
हवा में उड़ रहे
पानी में रहे तैर

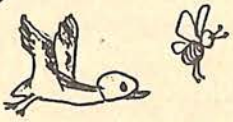

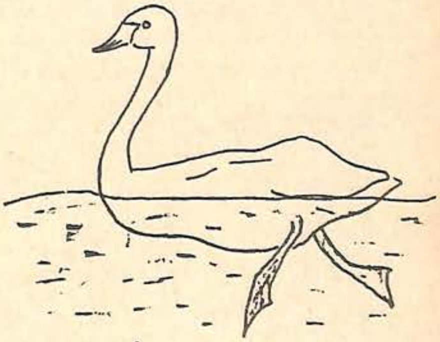

ऊपर पैर, नीचे पैर

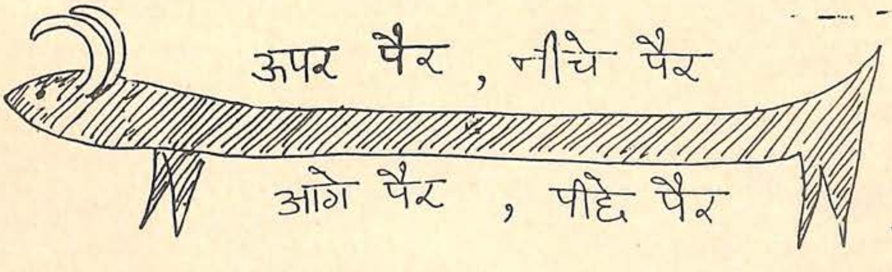

आगे पैर, पीछे पैर

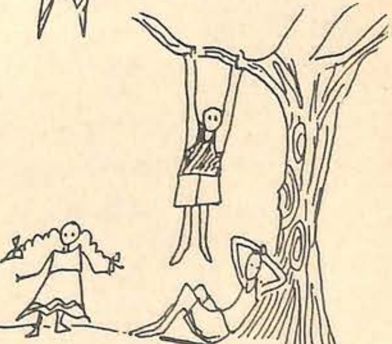

घर में, बाज़ार में
पैर ही पैर

कैसे कैसे पैर
देखो करते हैं सैर

कविता, चित्र : स्मिता अग्रवाल, जयपुर

धारावाहिक-4

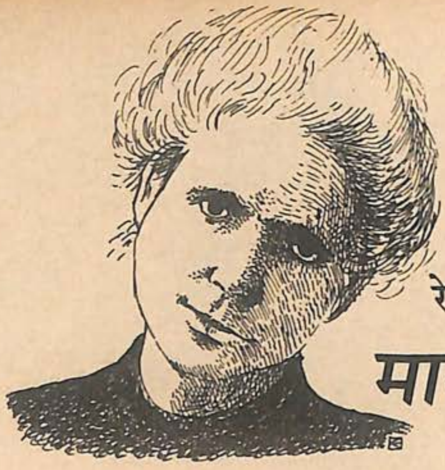

रेडियम महिला

मारी क्यूरी

अब तक तुमने पढ़ा.....

मान्या जब पैदा हुई तो पोलैण्ड पराधीन था। गुलाम पोलैण्ड में उन दिनों पढ़ना-लिखना आसान काम न था। फिर भी जैसे तैसे करके मान्या ने अपनी पढ़ाई की। मान्या की बहन ब्रोन्या पेरिस में रहने लगी थी। उसने एक डॉक्टर से विवाह कर लिया था। मान्या भी पेरिस चली गई। वहां सारबान विश्वविद्यालय में उसने आगे की पढ़ाई के लिए दाखिला लिया। वहीं उसका परिचय पियरे क्यूरी से हुआ। पियरे क्यूरी अध्यापक थे। और फिर एक दिन मारी स्कलोडोव्सका मादाम क्यूरी बन गई। कुछ समय बाद ही क्यूरी दंपति के यहां एक लड़की ने जन्म लिया। अब पढ़ो आगे.....

अदृश्य किरण

इरीन के जन्म से पहले ही मारी सारबान विश्वविद्यालय की परीक्षा समाप्त कर, डाक्टरेट की डिग्री लेने की बात सोच रही थी। वह चाहती थी कि वैज्ञानिक खोज-बीन के लिए कोई एकदम नया विषय चुने। वैज्ञानिकों के पिछले दिनों प्रकाशित लेखों की छान-बीन में वह लगी रहती।

डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त करना कोई आसान काम नहीं था! इसके लिए ज़रूरी था कि किसी ऐसी चीज़ का पता लगाया जाए जिसकी पहले किसी को टोह न मिली हो, या किसी ऐसी गुत्थी को सुलझाया जाए, जिसका अभी तक कोई हल न निकला हो।

मारी जिस प्रयोगशाला में काम करती थीं, उसके अध्यक्ष थे पियरे क्यूरी। सो, खोज-बीन का विषय चुनने में मारी को सबसे अधिक सहायता मिली पियरे से ही।

यह तो तुम जानते ही हो कि पियरे फ्रांस के एक बड़े वैज्ञानिक थे। पदार्थ-विज्ञान में उनके ज्ञान और अनुभव की थाह नहीं थी।

मारी और पियरे दोनों बातें किया करते...।

क्या बातें किया करते?

यही कि ऐसी कौन-सी चीज़ें हैं, जिनके बारे में आदमी को आज तक कुछ नहीं मालूम? किसी ऐसी चीज़ का भेद पाना होगा, जो न सिर्फ आदमी की जानकारी बढ़ाए बल्कि उसके काम भी आए।

वैज्ञानिक क्षेत्र में उन दिनों रोज़ नए-नए आविष्कार हो रहे थे। इन आविष्कारों को लेकर वैज्ञानिक दीवाने हो रहे थे। बहुत खोज-बीन के बाद वैज्ञानिकों ने घोषणा की थी कि संसार

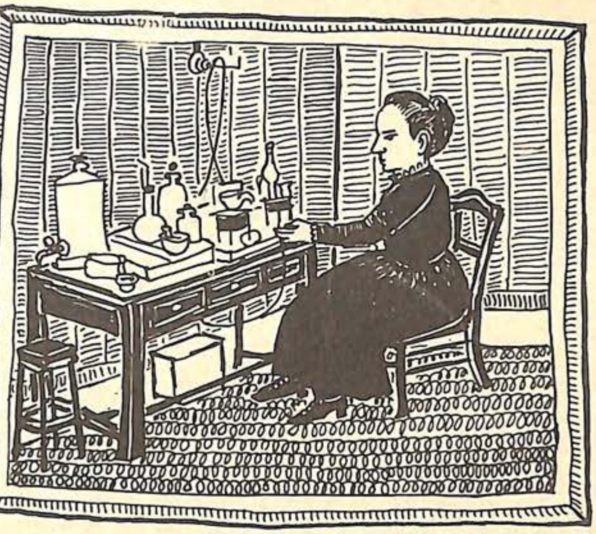

में कुल मूल-तत्व 92 हैं। ये मूल-तत्व ऐसे होते हैं कि चाहे जितना बांटों-चूंटो, बारीक से बारीक भागों में विभाजित करो, उनकी प्रकृति, उनका मौलिक गुण, नहीं बदलता।

मादाम क्यूरी ने डाक्टरेट की डिग्री के लिए जो विषय चुना, और जो खोज उन्होंने की, उससे वैज्ञानिक जनता में बड़ी हलचल मची। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि ऊपर बताए मूल-तत्वों के अलावा और भी मूल-तत्व हैं। इनके बारे में अभी तक किसी को कुछ मालूम नहीं था। इन्हीं दिनों हेनरी बेकरेल नामक पेरिस के एक अध्यापक ने रंटजन किरण के बारे में लेख लिखा। उन्होंने एक नई किरण का पता लगाया था। इस किरण का नाम रखा गया 'एक्स-रे'। 'एक्स-रे' का दूसरा नाम रंटजन किरण भी है। इसकी विशेषता यह है कि डाक्टर लोग इसकी मदद से मानव शरीर के रक्त-मांस को भेदकर चमड़े के नीचे की हड्डियों का भेद जान लेते हैं।

जैसा कि स्वाभाविक था, इस किरण के बारे में वैज्ञानिकों ने बड़ा उत्साह दिखाया। इसी किरण के बारे में खोज करते-करते बेकरेल को एक दिन पता चला कि यूरेनियम नाम की धातु से भी एक प्रकार की अदृश्य किरण निकलती है।

कैसी अद्‌भुत किरण है यह! मारी तो मुग्ध हो गई। बेकरेल की खोज के बारे में पियरे और मारी में बड़ी गंभीर बातें हुआ करतीं। बेकरेल अभी तक केवल इतना ही कह पाए थे कि इस तरह की किरण मौजूद है। अब यह पता लगाना कि वास्तव में यह चीज़ है क्या मारी का काम था। अंत में फैसला हुआ कि इस किरण के बारे में खोज-बीन को ही मारी डाक्टरेट की डिग्री का विषय चुने।

लेकिन कठिनाइयां! कठिनाइयां बहुत-सी थीं। सबसे बड़ी कठिनाई यही थी कि इस विषय पर पुस्तकें नहीं थीं। न ही इस विषय को कोई अध्यापक पढ़ाता था। बेकरेल महोदय केवल इतनी मदद कर सकते थे कि कह दें, 'हां, इस तरह की किरण मौजूद है।' इस विषय पर खोज-बीन के लिए प्रयोगशाला चाहिए थी; साज-सामान चाहिए था। ...यह सब कौन जुटाएगा?

बहुत कोशिश-पैरवी और पदार्थ-विज्ञान विभाग के अधिकारियों से विनय-प्रार्थना करने के बाद मारी के लिए विश्वविद्यालय की निचली मंज़िल में एक सीलन भरा कमरा मिला। कमरा क्या था, फालतू गोदाम समझो उसे! दिमाग ठिकाने रखना और काम करना—दोनों बातें बहुत कठिन थीं यहां। गर्मी में उमस और पसीने से बुरा हाल। जाड़ों में ठंड; प्रयोग के सूक्ष्म औजार काम न करें। लेकिन यहां कोई मारी की तपस्या में विघ्न डालने वाला नहीं था। एकचित्त होकर अपने औजार से वह यूरेनियम के कण-कण की जांच करती। यह औजार किसी और ने नहीं, स्वयं पियरे क्यूरी ने उसके लिए तैयार किया था।

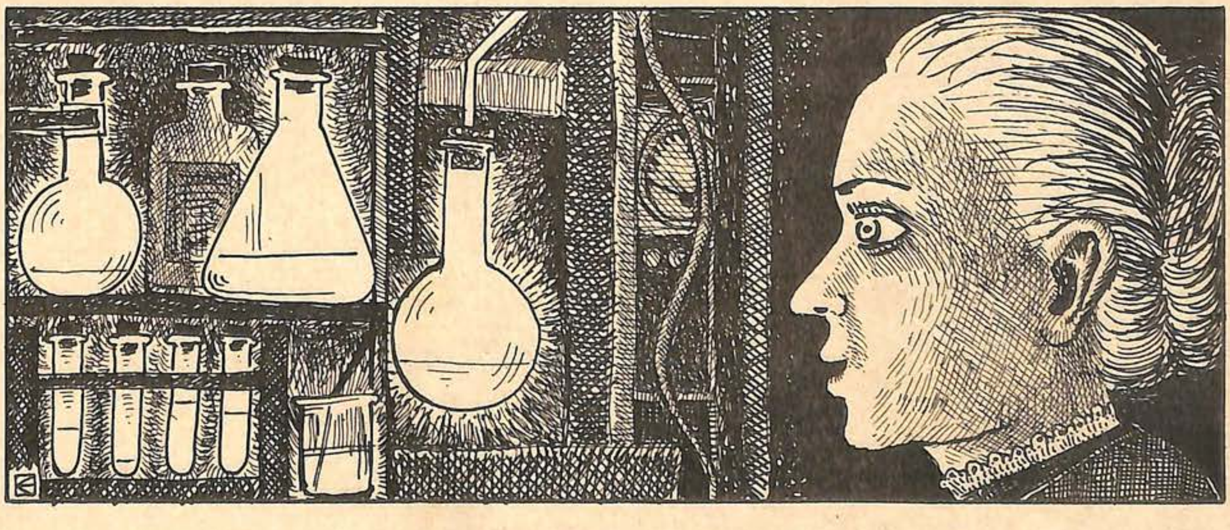

औजार बहुत पेचीदा न था। अदृश्य किरण का एक विशेष गुण वैज्ञानिकों को खास महत्व का लगा। यों तो किसी गैस या हवा के भीतर से बिजली नहीं दौड़ सकती, लेकिन दौड़ भी सकती है—अगर उसमें अदृश्य किरण पड़ जाएं।

तुम्हें पियरे वाले औजार के बारे में कुछ बता दूं?

इस औजार में धातु की दो पत्तियां थोड़े से फासले पर बैठाई गई थीं। इन पत्तियों के बीच ज़रा-सी यूरेनियम रखने की देर होती कि दोनों पत्तियों के बीच से, हवा के भीतर से, बिजली दौड़ने लगती। क्यों होता ऐसा? बस, यूरेनियम से निकलने वाली उसी अदृश्य किरण के कारण। कितनी बिजली दौड़ रही है, इसका भेद भी बिजली मापने के यंत्र से मालूम हो जाता। बिजली के प्रवाह को मापकर अनुमान लगाया जा सकता था कि यह अदृश्य किरण कितनी शक्तिशाली है।

मारी सोचने लगी...

क्या?

वह सोचने लगी कि यूरेनियम के सिवा और किसी धातु से भी इस तरह की किरण निकलती है या नहीं। सो, उसने एक फैसला किया।

फैसला यह कि संसार के सभी जाने-पहचाने तत्वों को जांचकर देखेगी कि किसी और से ऐसी किरण निकलती है या नहीं।

कितनी हिम्मत का काम था! सोच कर ही ताज्जुब होता है।

घर-गृहस्थी, पति, ससुर, बेटी! सभी से मारी को अगाध प्रेम था। मारी ने कभी अपने कर्त्तव्य में लापरवाही नहीं की थी। और अब एक अज्ञात किरण को पकड़ने की उत्सुकता से उसके चेहरे पर नई चमक, आंखों में नई रोशनी, आ गई थी।

जितनी धातुओं का अब तक पता था, सभी को मारी ने जांच कर देखा। पता चला कि थोरियम नाम की जो धातु

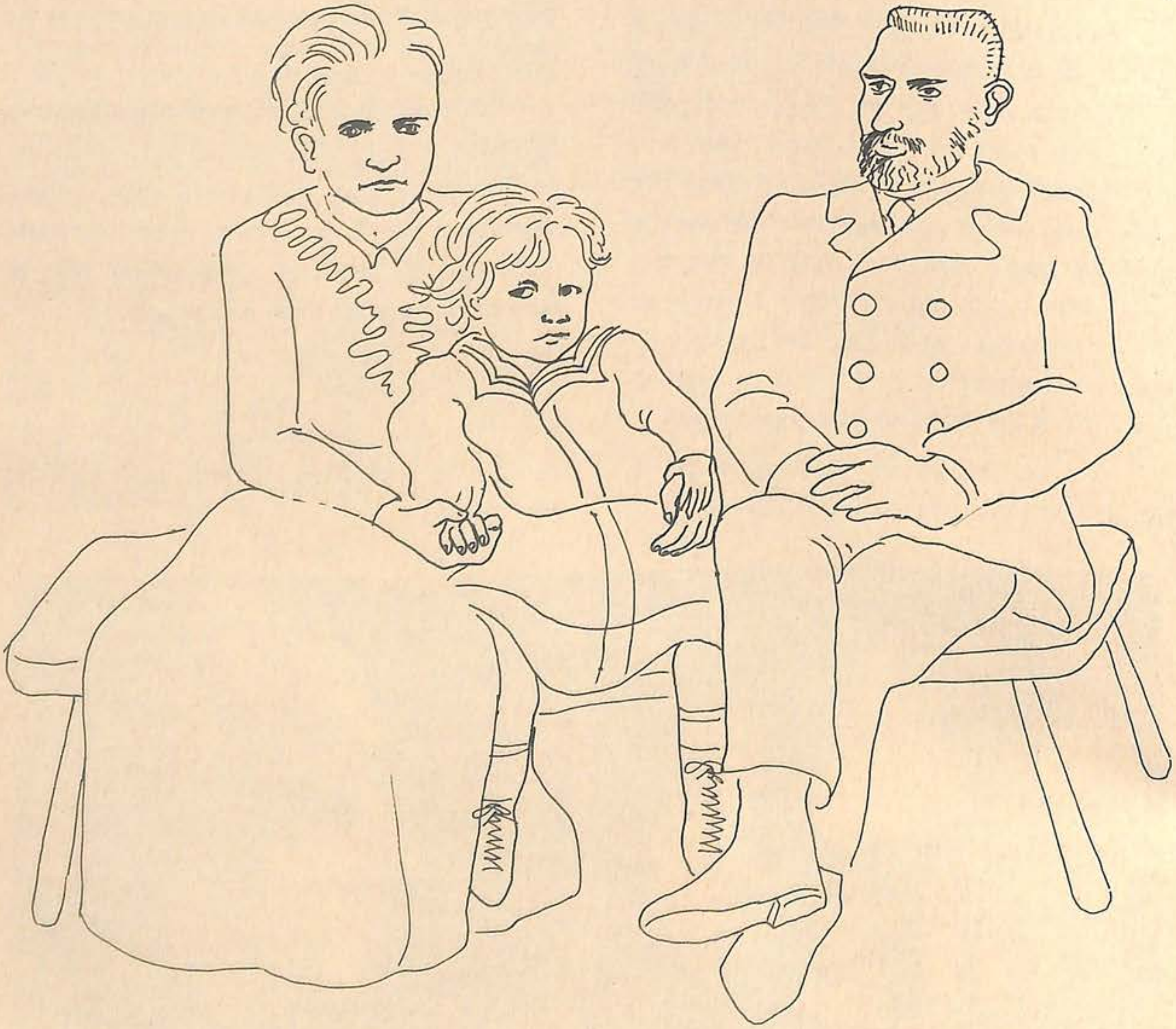

है, उससे भी इसी तरह की अदृश्य किरण निकलती है। किसी धातु से अदृश्य किरण निकलने के गुण का नाम उन्होंने रखा—रेडियो-ऐक्टिविटी।

लेकिन यह रेडियो-ऐक्टिविटी दो ही धातुओं में क्यों? मारी की उत्सुकता का ठिकाना न था। एक पल वह शांत न बैठ सकी। सीधी म्यूजियम पहुंची। जितने भी खनिज पदार्थ वहां थे, सब की परीक्षा करके वह देखेगी।

इन खनिज-पदार्थों में से बहुतों के गुण-अवगुणों का पता वैज्ञानिक लोग पहले ही लगा चुके थे। मारी को अब केवल उन्हीं पदार्थों की परीक्षा करनी थी जिनके रेडियो-ऐक्टिव होने की संभावना थी। 'संभावना वाले' ऐसे ही एक पदार्थ को चुनकर मारी ने उसमें से यूरेनियम और थोरियम धातुओं को अलग किया और उनकी परीक्षा की। अलग-अलग परीक्षा के बाद उसने शेष पदार्थ की परीक्षा की।

मारी आश्चर्य से हक्की-बक्की रह गई। उसने बार-बार परीक्षा की। कम से कम बीस बार परीक्षा की। बड़े अचरज की बात है! यूरेनियम और थोरियम में जितनी है उससे कहीं ज़्यादा रेडियो-ऐक्टिविटी इस पदार्थ में है।

तब?

तब मारी ने सोचा कि ज़रूर कोई चीज़ ऐसी है जो यूरेनियम और थोरियम से भी ज़्यादा शक्तिशाली है और यह रेडियो-ऐक्टिविटी उसी के कारण है।

यह बात है 1898 की। मारी ने एक वैज्ञानिक लेख लिखा। लेख में उसने घोषणा की कि पीचब्लेंड और चारकोलाइट खनिज-पदार्थों में यूरेनियम और थोरियम से अधिक—हां कई गुनी अधिक— रेडियो -ऐक्टिविटी है। पता चलता है कि इन खनिज पदार्थों में, थोड़ी मात्रा में ही सही, कोई ऐसी चीज़ ज़रूर है जो बहुत शक्तिशाली है और जिस पर वैज्ञानिकों की अब तक नज़र नहीं पड़ी।

अब तो अपना खोज-बीन का काम छोड़ पियरे भी मारी के काम में हाथ बंटाने लगे। मारी का काम था भी तो बहुत महत्व का। मारी और पियरे की मिली-जुली ताकत इस अनजानी चीज़ का पता लगाने में जुट गई।

मारी की इन दिनों की डायरी को देखकर बड़ा अचरज होता है। उसमें एक ओर जहां विज्ञान की चर्चा है, वहां घरेलू जीवन की छोटी-मोटी समस्याओं, मामूली सुख-दुःख की भी चर्चा है। मारी की प्रयोगशाला थी एक गोदाम में। इस गोदाम का तापमान घटते-घटते शून्य के निकट पहुंच जाता तो मारी मानो ठंड का मजाक बनाती हुई, तापमान दर्ज कर, उसके आगे दस विस्मयसूचक चिह्न बना देती। इरीन की उसके पास एक अलग डायरी थी। बिटिया की सभी बातें इस डायरी में लिखी जातीं।

लो, दो-एक जगह से पढ़कर तुम्हें सुना ही दूं। एक जगह लिखा है : ''इरीन हाथ उठाकर 'थेंक यू' कहना सीख गई है। घुटनों के बल खूब दौड़ती है। तुतला-तुतलाकर बोलती है।'' ...आगे की एक तारीख में लिखा है : ''नीचे की कतार में बाईं ओर इरीन का सातवां दांत निकल आया है। एक-आध मिनट को अब खड़ी भी होती है।'' ...बीच-बीच में इरीन का वजन भी लिखा है। एक जगह मारी ने लिखा है, ''आठ पौंड फलों में आठ पौंड चीनी दस मिनट उबालने के बाद पतले कपड़े से छान ली। चौदह बोतल बढ़िया काली जेली तैयार करके रख दी है।''

इन छोटे-मोटे घरेलू कामों के साथ ही खोज-बीन का काम भी होता।

एक रासायनिक विधि से पीचब्लेंड के अलग-अलग भाग करके हर भाग की रेडियो-ऐक्टिविटी को उन्होंने अलग-अलग नापा। किसी भाग में बहुत ज़्यादा रेडियो-ऐक्टिविटी मिली, किसी भाग में बिल्कुल नदारत। अब रेडियो ऐक्टिव भाग को रासायनिक विधि से और भी छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटा गया। पहले की तरह हर टुकड़े की फिर अलग-अलग परीक्षा की गई। इस तरह उन्होंने पीचब्लेंड के रेडियो-ऐक्टिव अंश को धीरे-धीरे अलग करना शुरू किया। कुछ दिनों तक परीक्षा करने के बाद पता चला कि दो अलग-अलग भागों में रेडियो-ऐक्टिविटी पाई जाती है।

1898 का जुलाई महीना। एक भाग को शोध-कर आखिर उस रेडियो-ऐक्टिव तत्व को अलग कर ही लिया गया।

''क्या नाम होगा इस 'नवजात शिशु', यानी इस शोधे हुए तत्व का?'' पियरे ने मारी से पूछा।

हां! क्या नाम होगा? मारी सोच में पड़ गई। बहुत सोचा उसने। अपने देश के बारे में सोचा। गुलाम पोलैंड के बारे में सोचा। वह सोचती रही, सोचती रही। सोच चुकने के बाद पियरे के कान के पास मुंह ले जाकर धीरे से बोली, ''इसका नाम होगा—पोलोनियम!''

उस साल के दिसंबर महीने तक उन्हें यह भी पता चल गया कि एक बहुत शक्तिशाली, बहुत रेडियो-ऐक्टिव पदार्थ मौजूद है, हालांकि अभी तक वे उसे अलग नहीं कर पाए।

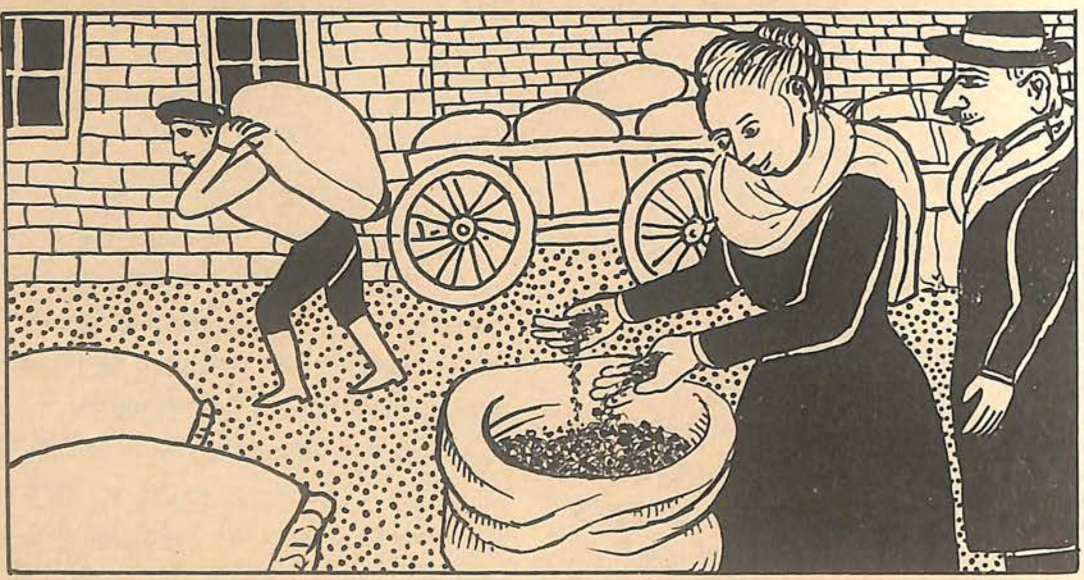

इसका नाम उन्होंने रखा—''रेडियम''।

इस अजनबी का नाम तो उन्होंने रख लिया। लेकिन कैसा है उसका चेहरा-मोहरा, कैसा है उसका रूप-रंग, यह कुछ पता न था। वैज्ञानिकों ने कहा, ''जब तक आंख से उसे देखें नहीं, हाथ से परखें नहीं, तब तक क्या मालूम कि वह है भी या नहीं।''

पियरे और मारी ने अपने कार्य को अब और आगे बढ़ाया। शोध-कार्य के लिए जितने पीचब्लेंड की—रेडियम निकालने के लिए—ज़रूरत थी, उतना खरीद पाना उनके बस की बात नहीं थी। यहां तो जैसे-तैसे गृहस्थी खींची जा रही थी। खर्च इधर बढ़ाओ तो उधर तंगी, और उधर बढ़ाओ तो इधर तंगी। किसी तरह खर्चा पूरा पड़ता ही न था। पीचब्लेंड खरीदें तो कैसे?

आखिर उन्हें एक बात सूझी। उन्होंने तय किया कि बोहेमिया के एक कारखाने से, जहां पीचब्लेंड का प्रयोग किया जाता था, प्रयोग किया हुआ पीचब्लेंड खरीद लेंगे। कारखाने वाले करते यह थे कि कांच बनाने के लिए पीचब्लेंड से यूरेनियम निकालकर फिर उसे फेंक देते थे। सो, जब कारखाने वालों ने सुना तो कहा कि गाड़ी का खर्चा देकर यह फेंका-फिकाया सामान जितना चाहो उठा ले जाओ। बेशक, गाड़ी का किराया ज़रूर देना होगा। लेकिन गाड़ी का किराया भी तो कम न था!

दिन बदले हफ्तों में, हफ्ते बदले महीनों में, महीने बदले वर्षों में।

लोहे के बड़े-बड़े कड़ाहे। इन कड़ाहों में मारी उबालती पीचब्लेंड। एक बड़ी लाठी से चला-चलाकर शुद्ध करती उसे। मारी और पियरे दोनों एक-से-एक नए प्रयोग करते। काम की धुन में नहाने-धोने, खाने-पीने की भी सुध न रहती। दोनों की आंखों में एक सपना समाया हुआ था।

एक दिन पियरे कह ही तो बैठे, ''मुझे आशा है कि उसका रूप-रंग बहुत सुंदर होगा।''

सन् 1900 में फ्रांस के रसायन-विज्ञान शास्त्री आन्द्रे देवियर्न भी मारी और पियरे की मदद के लिए आ पहुंचे। उन्होंने समान जाति के एक और पदार्थ की सूचना दी। पोलोनियम और रेडियम को आंखों से देखने के पहले ही, देवियर्न ने 'एक्टिनियम' को खोज निकाला था।

(अगले अंक में जारी)

लेखिका : गीता बंदोपाध्याय
अनुवाद : त्रिभुवन नाथ
सभी चित्र : कैरन

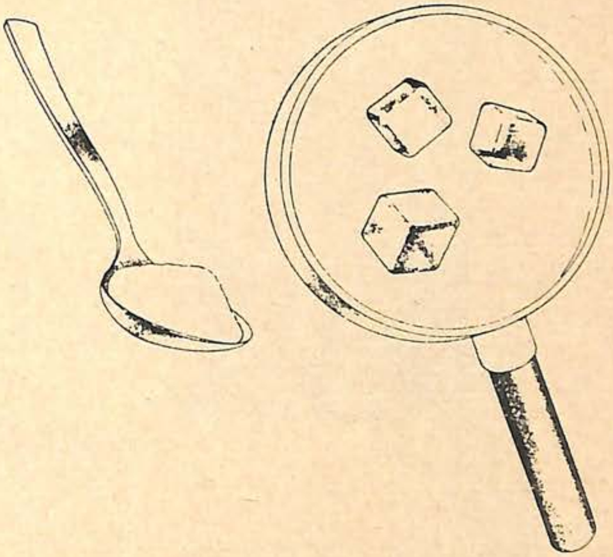

घर में बनाओ रवे

तुमने कभी शक्कर के कणों को ध्यान से देखा है? यदि तुम्हारे पास लेंस हो तो एक कण का सूक्ष्म अवलोकन करो। उसका आकार कैसा है, देखो। अब थोड़ी शक्कर पीस लो। चूर्ण का अवलोकन करो। क्या अब भी उसमें घन आकार के कण मौजूद हैं? क्या तुम चूर्ण से दुबारा घन आकार के कण बना सकते हो? इन कणों को रवे या क्रिस्टल कहते हैं। तुम स्वयं भी घर पर क्रिस्टल बनाकर देख सकते हो। पहले क्रिस्टल के बारे में कुछ बात करें।

प्रकृति में विभिन्न प्रकार के रवे पाए जाते हैं। कुछ खास स्थितियों में, विशेष प्रक्रियाओं के दौरान प्रकृति में भी खनिजों के रवे बनते हैं। क्रिस्टल एक यूनानी शब्द 'क्रिस्टलॉस' से बना है, जिसका अर्थ है "बर्फ के समान ठंडा"। यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि एक ज़माने में लोगों की यह समझ थी कि रवे पानी के जमने से बनते हैं। यह भी गलतफहमी थी कि एक बार रवे के रूप में जम जाने के बाद दुबारा पानी नहीं बनता! आज हम यह भी जानते हैं कि रवे केवल पानी के जमने से ही नहीं बनते, बल्कि कई अन्य रसायनों से भी बनते हैं।

प्रकृति के सबसे बढ़िया रवे पृथ्वी के भीतर गुफाओं में बनते हैं। पृथ्वी के खनिज पानी में घुले रहते हैं। जब पृथ्वी की आंतरिक गर्मी से चट्टानें पिघलकर सतह तक पहुंचती हैं तब उनमें मौजूद खनिज पृथ्वी के अंदर ही रह जाते हैं। घुले खनिजों का पानी जब वाष्पीकरण से निकल जाता है तो खनिज रवे का रूप धारण कर लेते हैं। पानी का वाष्पीकरण जितनी धीमी गति से होता है रवा उतना बड़ा ही बनता है। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है।

रवे बनाने के लिए निम्नलिखित सामग्री एकत्रित करो—

— चार साफ बोतलें,
— थोड़ा नमक, शक्कर और फिटकारी,
— नायलॉन का धागा,
— गरम करने के लिए बरतन,
— कुछ तश्तरी।

पहले फिटकरी के रवे बनाते हैं। पहले बोतलों के लिए कार्डबोर्ड के चार ढक्कन बनाओ। बनाने का तरीका सरल है। कार्डबोर्ड पर बोतल को पलटाकर रखो। उसके मुंह का आकार पेंसिल से उतारो। अब आकार को काट लो। बस बन गए ढक्कन। ऐसे तीन ढक्कन और बनाओ। प्रत्येक ढक्कन में दो छोटे-छोटे छेद बनाओ।

अब थोड़ा पानी लगभग एक कप, बरतन में गरम करो। इसमें फिटकरी घोलो। फिटकरी तब तक घोलते रहो जब तक कि उसका घुलना बंद न हो जाए। बरतन को ठंडा होने के लिए रख दो। ठंडा होने पर थोड़ा-सा घोल तश्तरी में उड़ेल दो। बचे हुए घोल को एक बोतल में जमा दो। बरतन को साफ कर लो।

अब फिटकरी का एक रवा तश्तरी में पड़े घोल में डालो और तश्तरी को रात भर के लिए कहीं सुरक्षित स्थान पर रख दो। अगले दिन तुम पाओगे कि तश्तरी में फिटकरी के रवे गुच्छों के रूप में जमा हो गए हैं। लेंस से इनका अवलोकन करो।

सबसे बड़े और सुंदर रवे को चुनो। यह एक बीज रवा है। अब इसकी मदद से तुम एक बड़ा रवा तैयार कर सकते हो।

अब जो घोल तुमने बोतल में डाला था उसे देखो। संभव है उसमें भी कुछ रवे बन गए होंगे। इस घोल को बरतन में डालकर तब तक गरम करो जब तक कि उसमें मौजूद रवे घुल न जाएं।

इस घोल को फिर से ठंडा करो और वापस बोतल में भर लो। अब बीज रवे को एक नायलॉन धागे में बांधो। धागे के दूसरे सिरे को कार्डबोर्ड ढक्कन के एक छेद से निकालकर गठान लगा दो। ध्यान रहे कि धागा उतना ही लंबा हो जिससे बीज रवा बोतल में भरे घोल में लटका रहे। बोतल को उठाकर कुछ दिनों के लिए किसी ठंडे स्थान पर रख दो।

लटका हुआ रवा धीरे-धीरे बड़ा बनता जाएगा। अंत में तुम्हें फिटकरी का एक बड़ा और सुंदर रवा मिलेगा। यदि उसे और अधिक बड़ा बनाना चाहते हो तो ताजा घोल बनाकर प्रयोग को दुहराओ।

अब यही प्रक्रिया शक्कर और नमक के साथ करो।

अपना थर्मामीटर बनाओ

गर्मी पाकर गैसें फैलती हैं यह शायद तुम जानते होगे। इसे देखने के लिए तुम एक आसान प्रयोग कर सकते हो।

इंजेक्शन की खाली शीशी लो। बालपेन की खाली रीफिल का लगभग पांच सेंटीमीटर टुकड़ा भी लो। अब शीशी के ढक्कन के बीच में किसी सुई या कील से छेद करो। यह ध्यान रहे कि छेद लीड की मोटाई से अधिक बड़ा न हो। छेद में लीड के टुकड़े का सिरा थोड़ा-सा घुसाकर ढक्कन शीशी पर लगा दो।

अब पानी की एक-दो बूंदें लीड के बाहरी सिरे में डालो। यदि पानी अंदर न जाए तो ढक्कन को थोड़ा-सा ऊपर उठाने पर पानी लीड में चला जाएगा। चाहो तो पानी में थोड़ी-सी स्याही डालकर उसे रंगीन बना लो।

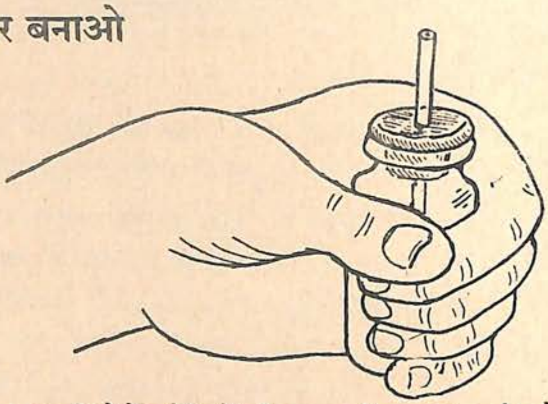

अब अपनी दोनों हथेलियों को आपस में रगड़कर गर्म करो और किसी एक हथेली में बोतल को दबाकर पकड़ो।

देखो लीड में पड़ी पानी की बूंद का क्या हुआ। इस प्रयोग के आधार पर तुम एक साधारण थर्मामीटर बना सकते हो।

करके देखो!

क्या तुम अपनी उंगलियों को फैलाकर ऐसी आकृति बना सकते हो?

अपनी जीभ को इस तरह गोल कर सकते हो?

भाग - नौ

..... विषयों का बंटवारा और अहमियत पहले से ही तय है

सिखाने की प्रचलित प्रक्रिया में हर विषय के लिए एक डिब्बा तय है—व्याकरण का डिब्बा, भूगोल का डिब्बा, इतिहास का डिब्बा .....डिब्बे ही डिब्बे! जब स्कूल में ज़रूरत पड़ती है बच्चे इन डिब्बों को खोलते हैं। लेकिन स्कूल के बाहर इन डिब्बों की उपयोगिता लगभग शून्य है।

यही नहीं इन डिब्बों को अहमियत के हिसाब से क्रमबद्ध किया गया है। यह अहमियत इस बात से झलकती है कि किस डिब्बे पर अधिक समय लगाया जाता है, या किस डिब्बे को बच्चे के इम्तहान के लिए ज़रूरी समझा जाता है।

शुरू के वर्षों में—यानि प्राथमिक शालाओं में—एक खास अहमियत दी जाती है :

भाषा को—केवल लिखित व मौखिक	—	चित्र, संगीत व शरीर के भावों को गैर-ज़रूरी समझा जाता है।
बौद्धिक गतिविधियां	—	करके सीखने की प्रक्रिया कम ज़रूरी समझी जाती है।
जटिल सोच-विचार	—	प्रयोगात्मक व ज़मीन से जुड़े तरीकों के बजाय।

... अजीबो गरीब बुज़ुर्गों से संचालित दुनिया

आखिर यह शिक्षक है क्या?

जैसा कि कुछ पालक समझते हैं, क्या यह बच्चों का भविष्य उज्जवल करने वाले शक्तिशाली प्रेरक हैं? या ये मात्र ऐसे पुर्जे हैं जो एक संस्था को ज़िंदा रखने का काम अदा करते हैं?

सच्चाई यह है कि वे खुद उसी तरह की ज़ंजीरों और तनावों से जकड़े हुए हैं जिनमें वे बच्चों को जकड़ कर रखते हैं।

इनमें से कई इस स्कूली व्यवस्था के समर्थक हैं और कभी-कभी उस दर्जे का काम भी करते हैं जिसकी स्कूल को उनसे अपेक्षा भी नहीं होती।

बाकी नई दिशाओं व बदलाव के रास्ते खोज रहे हैं।

इन शिक्षकों को कितनी आज़ादी दी जाती है?

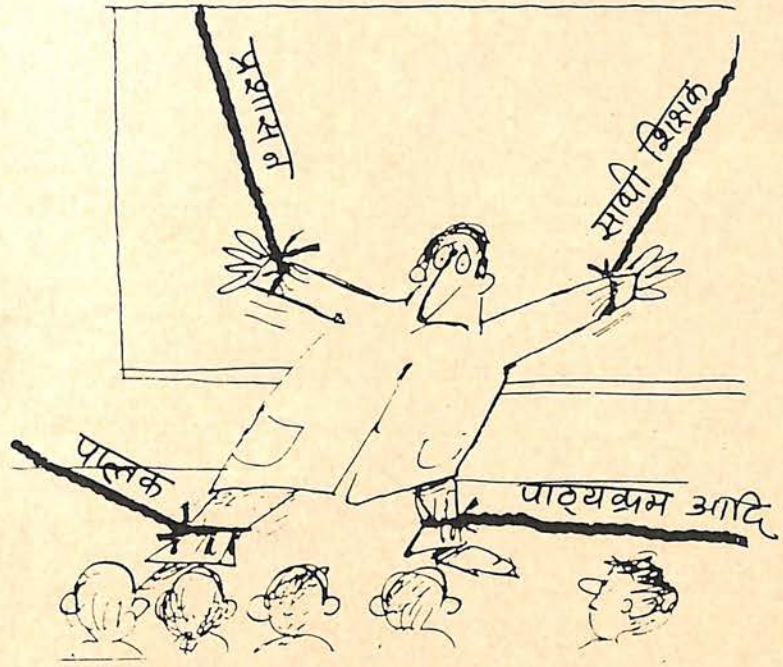

आमतौर पर शिक्षक प्रचलित शैक्षणिक व्यवस्था को मानते हैं और इस तरह से वे इस मशीन के बहुत ही अहम पुर्जे हैं!

3 ...पालकों से

जो शिक्षा व समाज को बांधने वाले सूत्र हैं और इस कारण शैक्षणिक व सामाजिक असूलों पर ज़्यादा असर डाल सकते हैं—जिनमें बदलाव को रोकना भी शामिल है।

सही तो यह है कि सभी पालकों के नियंत्रण से डर नहीं है, डर उनसे है जो शक्तिशाली हैं! अखबारों में लिखते हैं या भाषणबाज़ी करने में सक्षम हैं।

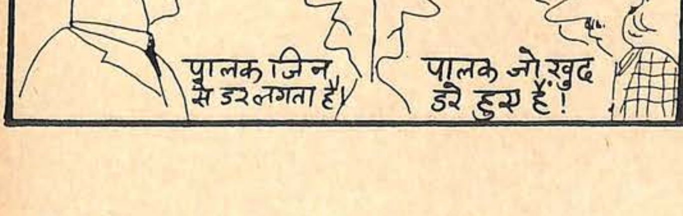

4 ...पाठ्यक्रम से

बेतुके व आतंक फैलाने वाले पाठ्यक्रम जो शिक्षक को पढ़ाना ही है... क्योंकि साल के अंत में उसी की परीक्षा है। ऐसे पाठ्यक्रम जिनको सब गाली देते हैं।

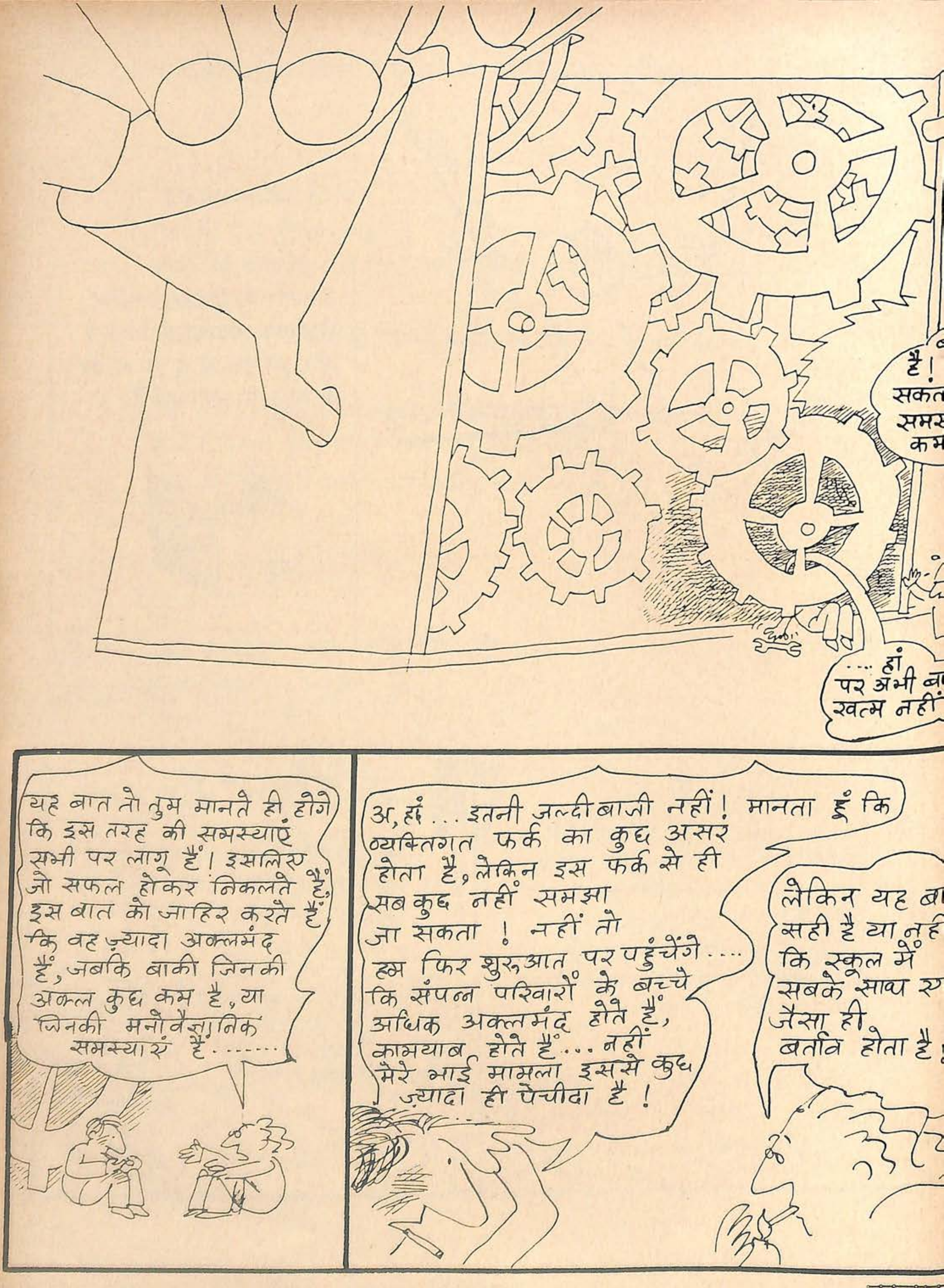

है!
... हां
पर अभी
खत्म नहीं
यह बात तो तुम मानते ही होगे कि इस तरह की समस्याएं सभी पर लागू हैं। इसलिए जो सफल होकर निकलते हैं, इस बात को जाहिर करते हैं कि वह ज़्यादा अक्लमंद हैं, जबकि बाकी जिनकी अक्ल कुछ कम है, या जिनकी मनोवैज्ञानिक समस्याएं हैं.......
अ, हां... इतनी जल्दबाजी नहीं! मानता हूं कि व्यक्तिगत फर्क का कुछ असर होता है, लेकिन इस फर्क से ही सब कुछ नहीं समझा जा सकता! नहीं तो हम फिर शुरुआत पर पहुंचेंगे.... कि संपन्न परिवारों के बच्चे अधिक अक्लमंद होते हैं, कामयाब होते हैं... नहीं मेरे भाई मामला इससे कुछ ज़्यादा ही पेचीदा है!
लेकिन यह
सही है या नहीं
कि स्कूल में
सबके साथ
जैसा ही
बर्ताव होता है!

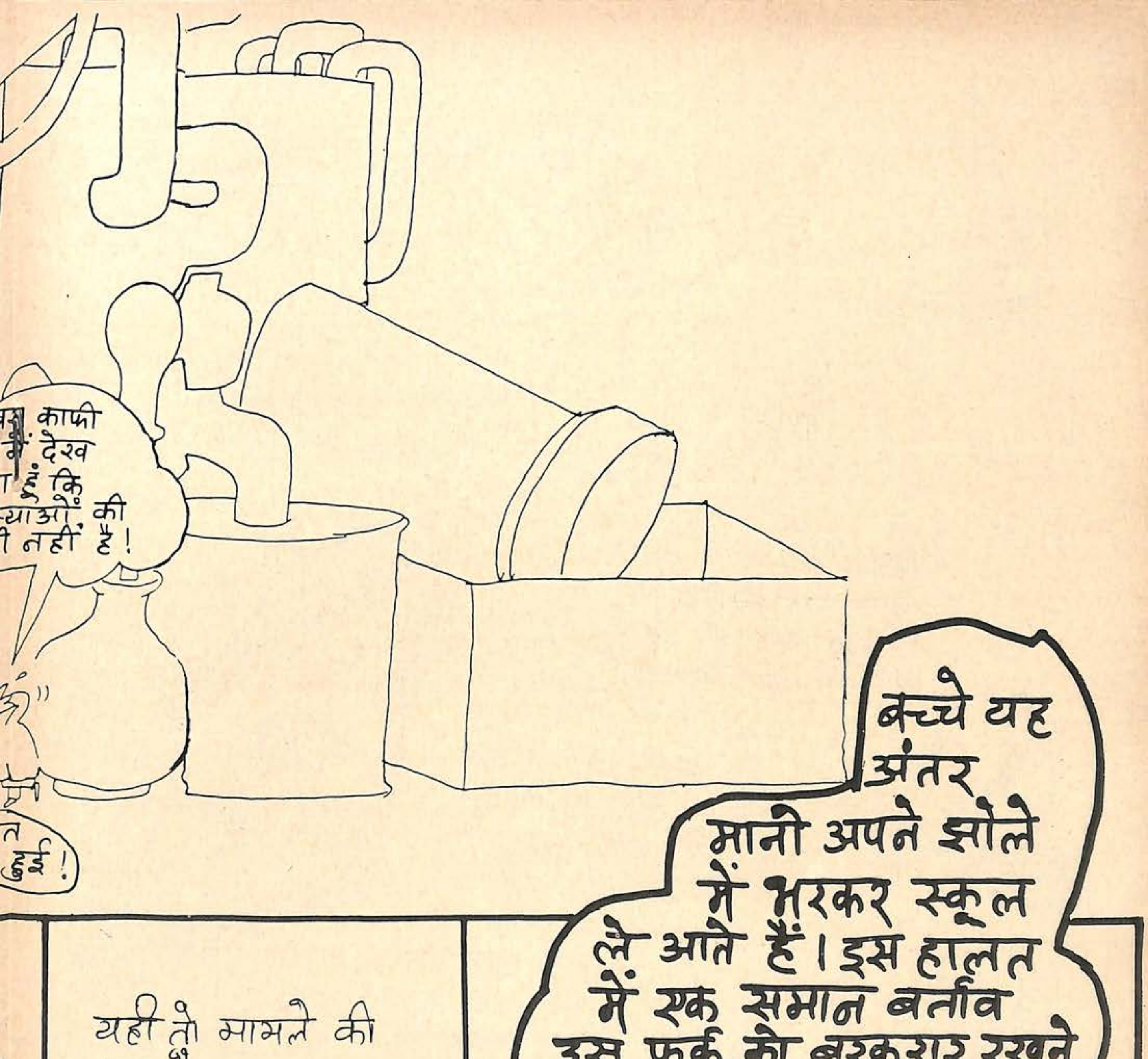

रूपांतरण : विनोद रायना

(अगले अंक में जारी)

कौन?

किसने बटन हमारे कुतरे?
किसने स्याही को बिखराया?
है संदूक बना दी कानी,
घर भर में अनाज बिखराया?

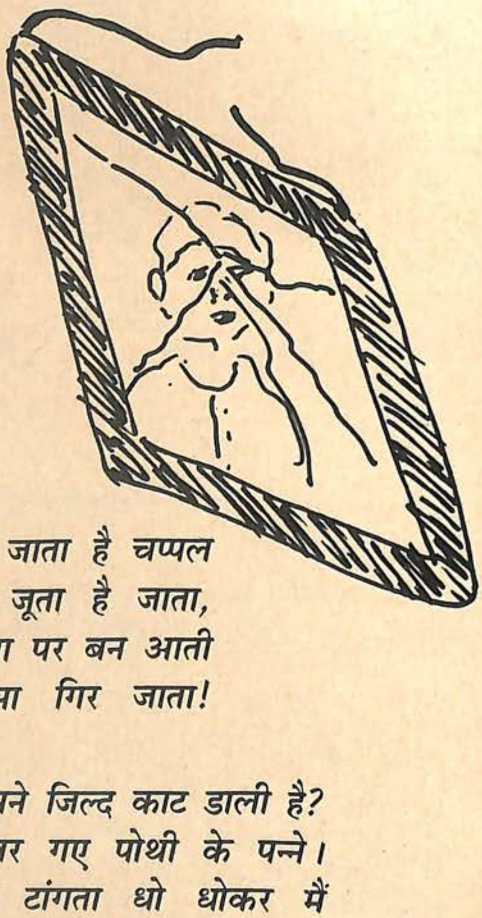

दोना खाली रखा रह गया
कौन ले गया उठा मिठाई?
दो टुकड़े तसवीर हो गई
किसने रस्सी काट बहाई?

कभी कुतर जाता है चप्पल
कभी काट जूता है जाता,
कभी खलीता पर बन आती
अनजाने पैसा गिर जाता!

किसने जिल्द काट डाली है?
बिखर गए पोथी के पन्ने।
रोज टांगता धो धोकर मैं
कौन उठा ले जाता छन्ने?

सिकहर से गिर पड़ी दुंधाड़ी
दही गिर गया सारा भू पर।
शक्कर की पुड़िया पल भर में
कौन चट्ट कर गया दुबक कर?

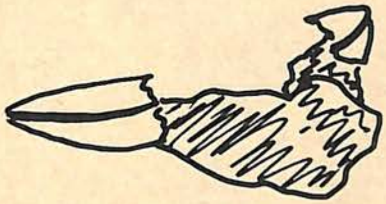

औंधी है चूने की भड़ियां
भीग गई है गद्दी सारी!
बटुआ फटा, बना है चलनी
कौन ले गया लौंग सुपारी?

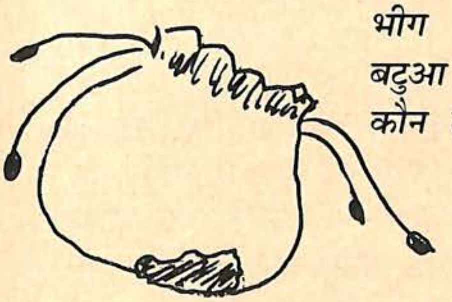

कुतर कुतर कर कागज सारे
रद्दी से घर को भर जाता!
कौन कबाड़ी है जो कूड़ा
दुनिया भर का घर भर जाता?

कौन रात भर गड़बड़ करता?
हमें नहीं देता है सोने,
खुर खुर करता इधर उधर है
ढूंढा करता छिप छिप कोने?

रोज रात भर जगता रहता
खुर खुर इधर उधर है धाता
बच्चो उसका नाम बताओ
कौन शरारत यह कर जाता?

□ सोहनलाल द्विवेदी
सभी चित्र : जया विवेक

(1)

माचिस की बारह तीलियों से चित्रानुसार चार वर्ग बनाओ।

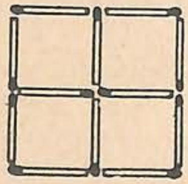

अब,

1. दो तिलियों को हटाओ ताकि भिन्न आकार के दो वर्ग बन जाएं।
2. तीन तीलियों को हटाओ ताकि तीन समान वर्ग बच जाएं।
3. चार तीलियों को हटाओ ताकि दो समान वर्ग बन जाएं।
4. चार तीलियों को हटाओ ताकि तीन समान वर्ग बच जाएं।
5. दो तीलियों को उठाकर आकृति में कहीं और इस तरह रखो कि सात भिन्न आकार के वर्ग बन जाएं।
6. चार तीलियों को उठाकर आकृति में कहीं और इस तरह रखो कि भिन्न आकार के दस वर्ग बन जाएं।

(2)

जब कोई कीड़ा चलता है तो उसकी टांगें कि क्रम से आगे बढ़ती हैं?

(3)

कौन-सी मछली है जो घोंसला बनाती है?

(4)

यहां बारह गोले दिए गए हैं। जिनसे तीन गोलों वाली आठ लाइन और चार गोलों वाली तीन लाइन बनती हैं। चकरा गए न! ध्यान से देखो तीन गोलों वाली आठ लाइनें ही हैं। अब इन बारह गोलों को फिर से इस तरह जमाओ कि चार-चार गोलों वाली छह लाइनें बन जाएं।

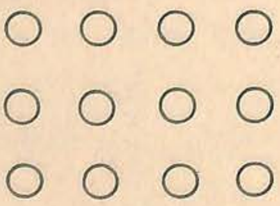

(5)

इन सात गोलों में दो और गोले मिलाओ और फिर उन्हें इस तरह जमाओ कि तीन गोलों वाली दस लाइनें बन जाएं।

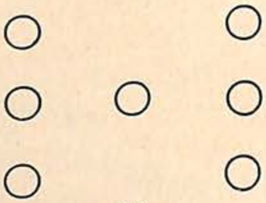

(6)

यह आकृति ग्यारह तीलियों से बनी है। इसमें दो तीलियों को उठाकर आकृति में इस तरह रखो कि ग्यारह वर्ग बन जाएं। और तीन तीलियों को उठाकर इस तरह रखो कि पंद्रह वर्ग बन जाएं।

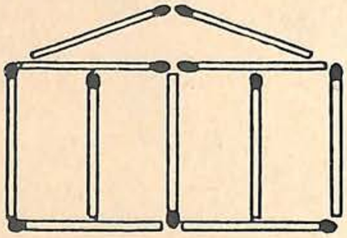

(7)

जाली में दिखाए अक्षरों को उनके समान दूसरे अक्षर से रेखा खींचकर मिलाओ। जैसे क को क से। रेखा खानों के बीच पड़ी खाली जगह में से खींच सकते हो। पर शर्त यह है कि अक्षरों को मिलाने वाली रेखाएं एक-दूसरे को काटें नहीं।

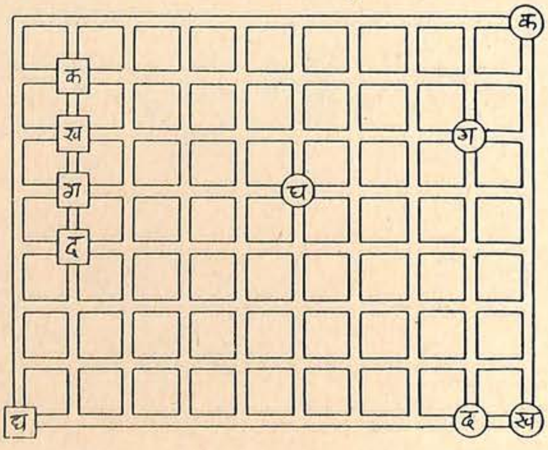

मान लो भोपाल शहर की जनसंख्या आठ लाख है। और यह संख्या भोपाल में रहने वाले किसी भी व्यक्ति के सिर पर उगे बालों की संख्या से अधिक है। हमें यह भी मालूम है कि भोपाल में कोई गंजा नहीं है। अब अगर उक्त जानकारी के आधार पर मैं कहूं कि 'भोपाल में दो ऐसे व्यक्ति हैं जिनके बालों की संख्या बराबर है।' बताओ यह कथन सच है या झूठ। और क्यों?

(9)

बिच्छू क्या खाता है?

(10)

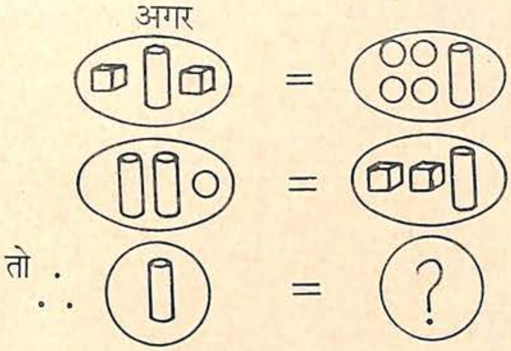

पहेलियां

नाचते रहना मेरा काम, मुझसे पाते सब आराम
ठंडक देता मैं दिन रात, झटपट बूझो मेरा नाम?

•

सिर उठा कर तोंद घुमा के, करते रहते हो तुम बात
जल्दी से मेरा नाम बताओ, वरना करने ना दूं मुलाकात?

•

खरीदने पर भूरी, जलाने पर लाल
बुझने पर काली, कैसा है कमाल

•

रत्ती भर का पेट, खा जाए सारा खेत?

□ महेंद्र राजपूत, छटवीं, इटारसी

•

जंगल है पर जानवर नहीं, नदी है पर मछली नहीं
बादल है पर चांद तारे नहीं, बोलो तो भला है क्या?

•

तीन अक्षर का मेरा नाम, गरमी देना मेरा काम
प्रथम कटे तो धूल कहाऊं, अंत कटे तो अंधा बन जाऊं

□ दिव्या गिल्ला, होशंगाबाद

वर्ग पहेली-20

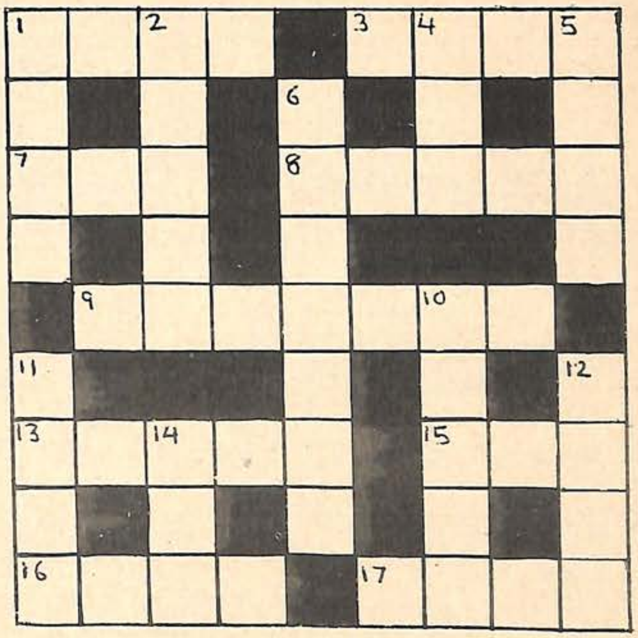

संकेत : बाएं से दाएं

1. गुड़ खाकर इससे परहेज? (4)
2. निराश्रित (4)
7. राहू शनि के सिर नहीं दे सकते गल्ला (3)
8. जज्बा साज की मिश्रित सजावट (5)
9. पेन का हवलदार, प्रेमचंद को कहा! (3, 1, 3)
13. आंख का तारा (5)
15. सरकार की शान में आधी सजा (3)
16. चीन कल उल्टी-सीधी (4)
17. जिसके हाथ में सारी बगडोर हो, या धागे हों (4)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. खोया हुआ रास्ता, भटका हुआ मुसाफिर (4)
2. सवाल का उत्तर, सीधा साधा गुण न फल (5)
4. थाली में दे पसर उल्टा सीधा (3)
5. जुरमाना की धुन पर (4)
6. न्याय की तुला (3, 1, 3)
10. खाना बनाने की विद्या (5)
11. अज्ञात (4)
12. जुलाहा (4)
14. नलके से लगाम (3)

वर्ग पहेली - 19 : हल

बाएं से दाएं : 4. सजल 6. नेताजी कहिन 7. साहस 9. अहित 11. कयावद 12. हकलाना 13. बरस 15. काजल 18. मज़ा किरकिरा 19. वजन।

ऊपर से नीचे : 1. अनेक 2. सजीव 3. त्राहि त्राहि 5. जवाहर लाल 8. हवाई जहाज़ 9. अदब 10. तहस 14. रम जाना 16. औरत 17. सराय।

अनिल का भूत

होस्टल के ठीक सामने स्कूल है और स्कूल के पहले कोने पर वह 'क्लास रूम' है, जिसमें से रात के समय निकल कर अनिल का भूत आस-पास के इलाके में घूमता है। हमारे वार्डन ने होस्टल में रहने वाले सभी बच्चों को सख्त हिदायत दी कि कोई बच्चा रात के समय होस्टल से बाहर न निकले। डर के मारे कोई बच्चा होस्टल के बाहर निकलने का दुस्साहस नहीं करता था।

वार्डन हमारे ज्योमेट्री के अध्यापक भी हैं। उन्होंने बताया, आज से तीन वर्ष पहले की बात है, एक बार रात में अनिल नाम का एक विद्यार्थी चुपचाप होस्टल से निकल कर इमली के पेड़ पर जा चढ़ा, संयोग से उसका पांव फिसल गया और वह गिर कर मर गया। अध्यापक महोदय अक्सर डांटते हुए कहा करते थे, 'इमली के पेड़ की तरफ जा रहे हो? चलो इधर! एक तो अनिल मरा था, अब तुम मरोगे। खबरदार कोई उधर गया तो!' और लड़के खट्टी-मीठी इमली का ध्यान करते हुए भी चुपचाप वापस घूम पड़ते। फिर भी चोरी-छिपे इमली खाई ही जाती थी।

हां, अनिल की मौत के समाचार की पुष्टि जिस रात चंदू ने की, उस दिन से लड़कों के दिलों में सचमुच भय समा गया और अब कोई लड़का रात को होस्टल के दरवाजे से बाहर कदम न रखता था। बहुत-से लड़के तो दिन में भी इमली के पेड़ की तरफ जाने से कतराने लगे।

और उस दिन तो सारे स्कूल में एक सनसनी ही फैल गई। रात अनिल का भूत कक्षा में आकर 'थ्योरम' नम्बर पांच का एक सवाल हल कर गया जिसे कल मास्टरजी भी नहीं कर पाए थे। सबेरे लड़के जब 'क्लास-रूम' में गए तो सबकी आंखें फटी की फटी रह गई। 'ब्लैक बोर्ड' पर आड़ी तिरछी रेखाएं खिंची हुई थी और 'थ्योरम' नम्बर पांच का पूरा का पूरा सवाल हल किया हुआ था। लड़कों के चेहरे पर कुतूहल और अनिल के भूत का आतंक स्पष्ट झलक रहा था।

आज ही ज्योमेट्री के अध्यापक इस साध्य का हल बताने वाले थे, मगर जब उन्होंने क्लास लेनी शुरू की और वह साध्य नम्बर पांच कराने लगे तो उन्हें भी यह देख कर आश्चर्य हुआ कि लड़के पहले से ही उसे जानते हैं।

मास्टरजी ने पूछा, "तुम्हें किसने बताई यह साध्य?"

चंदू ने एकदम खड़े होकर जवाब दिया, "अनिल का भूत कर गया है; मास्टरजी! अनिल ज्योमेट्री में बहुत तेज था। कल आप कह रहे थे कि कल बताऊंगा। शायद अनिल के भूत ने सुन लिया होगा और वह रातों रात..... ।"

"चुप रह। भूत का बच्चा।" मास्टरजी ने डांट कर चंदू को खामोश कर दिया, "सच बता, किसने बताई?"

"सच कह रहा हूं मास्टरजी, और लडकों से भी पूछ लीजिए," चंदू डरते-डरते बोला।

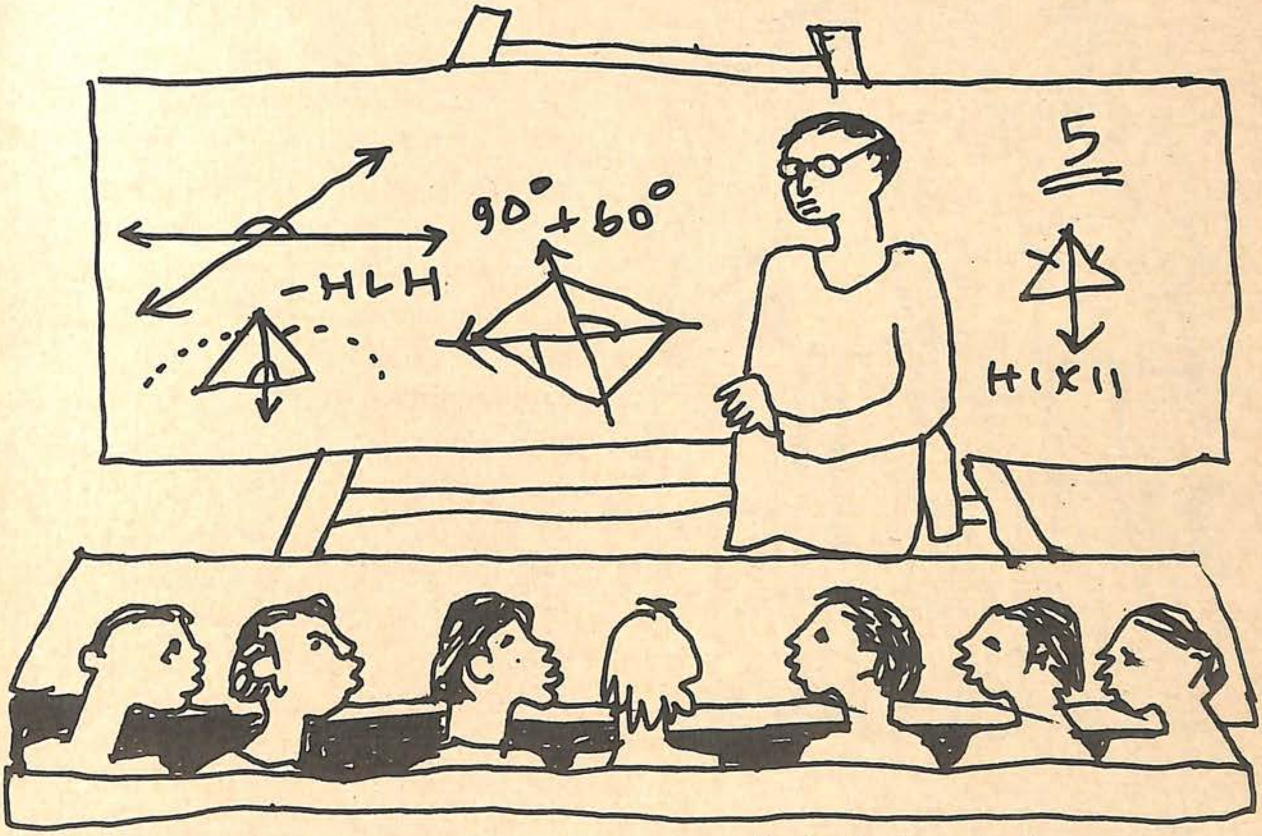

और जब सभी लड़कों ने इसका समर्थन किया तो मास्टरजी के चेहरे पर भी आतंक फैल गया। मास्टरजी बोले, "तुममें से किसी ने देखा है अनिल के भूत को?"

सब ने गर्दन हिला कर इनकार कर दिया। मास्टरजी ने और भी सख्त हिदायत दी, "अच्छा, आज हम क्लास नहीं लेंगे, तुम सब होस्टल में जाओ और कोई लड़का बाहर कदम न रखे।"

लड़के चुपचाप कानाफूसियां करते क्लास से बाहर निकल आए। सबके दिलों में अनिल के भूत का आतंक छा गया।

रात का अंधकार चारों ओर फैल गया। होस्टल के आस-पास दूर तक फैले जंगल में से कभी-कभी किसी जानवर की आवाज़ सुनाई पड़ जाती और उस समय सन्नाटे का वातावरण और भी भयानक हो उठता। यों तो होस्टल में दसवीं कक्षा के हम कोई चालीस-पचास लड़के थे, मगर हम पांच लड़कों में ही खूब पटती थी। चंदू, टिल्लू, रामू, श्याम और मैं रात होते ही किसी एक के बिस्तर पर एकत्रित हो जाते और फिर किस्से कहानियों को वह सिलसिला बंधता कि आधी रात आंखों-आंखों में ही निकल जाती। यहां तक कि अन्य विद्यार्थी आंखें झपकने लगते और सो जाते, पर हम पांचों एक ही बिस्तर पर जम कर बातचीत करते रहते। भूतों की बातचीत छिड़ती तो एक-दो और विद्यार्थी भी हमारे नज़दीक आकर बैठ जाते और उन कहानियों को बड़े चाव से ध्यान लगा कर सुना करते। और आज तो हमारे बिस्तर के इर्द-गिर्द पूरा का पूरा होस्टल ही जमा हो गया था। वार्डन साहब कब के सो चुके थे और विद्यार्थियों की खुसफुस जारी थी।

चंदू बोला, "अनिल का भूत इस समय भी बाहर कहीं घूम रहा होगा।"

लड़कों के चेहरों पर विस्मय और भय का सम्मिश्रण गहरा हो गया, शायद वे एक-दूसरे के नज़दीक खिसक रहे थे, जिससे उनमें हल्की सी सरसराहट हुई।

मैंने पूछा, "चंदू, तूने देखा है कभी भूत?"

पीछे से एक लड़का उचक कर बोला, "मैंने देखा है?"

"कहां?" मैंने फिर पूछा।

"जंगल में," वह बोला "एक दिन मैं जंगल की तरफ से लौट रहा था। मैंने देखा, सोने के हिरनों की डार मेरे सामने से चले जा रही है। दिन ढल रहा था और मैं जल्दी से जल्दी लौट आना चाहता था, मगर सोने के हिरनों की डार को देख कर क्षण भर रुक गया। वह डार थोड़ी दूर आगे गई और

एकाएक गायब हो गई। मैंने देखा उसकी जगह पर धूल-सी उड़ रही है। मुझे समझते देर न लगी कि यह भूत है। मैं तेजी से होस्टल की तरफ भागा।"

लड़कों ने आतंकित हो उसकी ओर देखा। कुछ लड़के मुस्करा दिए।

चंदू बोला, "भूत की सबसे आसान पहचान यह है कि उसके पांव उलटे होते हैं और वह प्रति क्षण अपना रूप बदलता रहता है।"

मैंने कहा, "रूप बदलता है तो पांवों के उलटे होने से क्या मतलब? क्या पांव वैसे के वैसे ही रहते हैं?"

इस पर सब लड़के हंस पड़े।

चंदू ने फिर कहा, "बच्चू, अभी पाला नहीं पड़ा, तभी मज़ाक कर रहे हो। किसी दिन दबोच लिया, तब कहना।"

टिल्लू ने बात साफ की, "भाई, जिस समय भूत मनुष्य के रूप में आता है उस समय उसके पांव उलटे ही रहते हैं।"

"तो यों कहो न!" श्याम ने कहा।

चंदू ने फिर कहा, "पिछले साल मैंने एक बार इमली के पेड़ पर चढ़े हुए अनिल के भूत को देखा।"

"अच्छा!" एक लड़के के मुंह से आश्चर्य भरे स्वर निकले। सबकी आंखें फैल गईं, कान खड़े हो गए।

कमरे में लालटेन का प्रकाश फैल रहा था और एक-एक कर आधे से अधिक लड़के अपने-अपने बिस्तरों पर जाकर सो गए थे। फिर कुछ देर में हम कुल नौ लड़के रह गए, जिनकी पलकें नींद से बोझिल हो गई थीं, मगर चंदू की बातों ने हम में अभी तक कुतूहल जगाया हुआ था। लालटेन की कांपती लौ में जब कमरे का अंधेरा कांपता तो एक अजीब-सी सनसनी दौड़ जाती हममें। रात की सांय-सांय में चंदू ने बताना आरंभ किया, "एक रात मैं चुपचाप होस्टल से बाहर निकल गया था। ठंडी हवा चल रही थी। दूर-दूर तक चट्टानों और घाटियों में चांदनी फैली हुई थी। मैंने सोचा, कुछ घूम ही लूं। मैं इमली के पेड़ के पास जा निकला। एकाएक इमली के पत्तों में सरसराहट-सी सुन कर मैंने सिर उठाया, तो जैसे मुझे काठ मार गया। थर-थर कांपने लगा। हिलूं तो हिला न जाए। क्या देखता हूं, कि एक बाहर को निकली डाल पर बैठा अनिल मुस्करा-मुस्करा कर मेरी ओर देख रहा है। उसके सफेद दांत चांदनी में बड़े भयानक लगे मुझे, फिर मेरी नजर उसके उलटे पांवों पर गई, तो मैं सिर पर पांव रख कर भागा और सीधे अपने बिस्तर पर आकर ही सांस ली। उस रात मैं सुबह तक न सोया।"

हम चारों को ही उसकी बातों पर विश्वास करना पड़ रहा था। कैसे न करते, चंदू इस प्रकार बता रहा था कि विश्वास न करने का सवाल पैदा ही नहीं होता था, इसलिए हमने उस पर विश्वास कर लिया।

मैंने पूछा, "तो अनिल ज्योमेट्री में बहुत तेज था?"

चंदू बोला, "इतना तेज कि कई बार मास्टरजी को भी उसी से राय लेनी पड़ती थी। मगर था बहुत ही शैतान।"

"धीरे बोल," श्याम ने कहा, "कहीं खिड़की के बाहर खड़ा सुन रहा होगा तो अभी सिर पर आ चढ़ेगा।"

मैंने कहा, "यहां तो हम कितने सारे हैं। मिल कर कचूमर निकाल देंगे।"

चंदू बोला, "रहने दो यार, भूत पर किसी का बस नहीं चलता। वह अपनी करनी पर उतर आए तो उसे कोई नहीं रोक सकता।"

मैंने कहा, "अच्छा, हम तो तब मानेंगे, जब वह साध्य नम्बर छह भी इसी प्रकार कर डाले।"

"उसे क्या मुश्किल?" रामू ने समझाया," भूत तो गड़ा हुआ धन बता सकता है, भविष्य बता सकता है और सब कुछ बता सकता है।"

मैंने कहा, "अच्छा, यह तो बताओ, वे बोर्ड पर खिंची रेखाएं टेढ़ी-मेढ़ी क्यों थी?"

चंदू बोला, "अंधेरे में लिखता है न! और यों भी भई, भूत के काम भूत ही जाने! पांव उलटे! चेहरा अजीब! रेखाओं में भी कुछ विचित्रता होगी ही!" कुछ रुक कर चंदू बोला, "भाई, मुझे नींद आ रही है।"

अब ऐसा लगता था, जैसे सब अपनी-अपनी बातें समाप्त कर चुके थे और किसी के पास कहने को कुछ बाकी न रहा था, इसलिए सब के सब एक विचित्र-सा भय लिए हुए उठे और अपने-अपने बिस्तरों पर आ लेटे। चंदू भी चादर तान कर सो गया।

अगले दिन जब हम 'क्लासरूम' में पहुंचे तो हमारे आश्चर्य का ठिकाना ही न रहा। 'ब्लैक बोर्ड' पर आड़ी-तिरछी रेखाओं में साध्य नम्बर छह समझाया हुआ था। लड़कों में फिर कानाफूसियां जोर पकड़ बैठीं और धीरे-धीरे सब एक जगह एकत्रित हो गए। मास्टरजी आए तो उन्हें भी सूचित किया गया कि अनिल का भूत साध्य नम्बर छह भी कर गया है। मास्टरजी ने भी बोर्ड की तरफ आश्चर्यचकित होकर देखा। कुछ देर वह सोच में पड़े रहे, फिर बोले, "अच्छा, हम तब जानें, जब अनिल का भूत 'पाइथागोरस' का थ्योरम भी हल कर जाए।"

मास्टरजी की इस चुनौती पर सब लड़के खुश हुए। और अगले दिन अनिल के भूत का करिश्मा देखने के लिए मास्टरजी ने उस दिन की क्लास छोड़ दी। हम सब लड़के बातें करते हुए फिर अपने होस्टल में लौट आए। सभी बातों में उलझे हुए थे, मगर एक व्यग्रता सब के मन में जोर मार रही थी कि अनिल का भूत 'पाइथागोरस' की थ्योरम हल कर पाता है या नहीं। दरअसल हाई स्कूल में पाइथागोरस की थ्योरम सबसे ज़्यादा मुश्किल मानी जाती है। वह लड़कों को किसी भूत से कम नज़र नहीं आती। अब भूत से भूत की लड़ाई होनी है। देखें, कौन जीतता है?

जैसे-तैसे करके रात हुई। आज लड़के कुछ अधिक देर तक जागे। अंत में जब सब की पलकें झपक गईं, तो एक खटका-सा हुआ, जिसे सुन कर मैं सोते-सोते अपने बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। मैंने उठ कर खिड़की से बाहर देखा, दूर अंधकार में एक छाया इमली के पेड़ की ओर से बढ़ रही थी और उसका रूख उसी 'क्लासरूम' की तरफ था। डर के मारे मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैंने झटपट पास ही लेटे टिल्लू को जगा दिया।

"टिल्लू! भूत!" बहुत ही दबी आवाज में मैंने कहा।

और टिल्लू जो शायद अभी तक पूरी तरह सो नहीं पाया था, भूत का नाम सुनते ही एकदम उठ बैठा। मैंने खिड़की की ओर इशारा किया और फिर खिड़की में से उसे भी, वह छाया दिखाई, हमारे देखते-देखते वह छाया 'क्लासरूम' में प्रवेश कर गई।

मैंने कहा, "चल देखें।"

"ना भई!" टिल्लू बोला, "मुझे तो डर लगता है। औरों को भी जगा लें।"

मैंने कहा, "ज़्यादा लड़कों का शोर सुन कर भूत भाग जाएगा। दोनों छिप कर देखेंगे भूत को! मैं आगे चलता हूं, तू मेरे पीछे आ।"

इस पर टिल्लू तैयार हो गया तो मैंने संतोष की सांस ली। बहुत अर्से से भूत को देखने की जो प्रबल इच्छा मन में बनी हुई थी, आज पूरी होते देख कर मैं काफी खुश था, मगर भीतर-ही-भीतर एक भय मेरे मन में भी समाया हुआ था।

मैं और टिल्लू धीरे-धीरे दबे पांव कमरे से बाहर निकल आए। अन्य विद्यार्थी गहरी नींद में सोए थे। हम दोनों तेजी से 'क्लासरूम' की ओर बढ़े और द्वार पर जाकर कान लगा दिए। टिल्लू मेरे पीछे खड़ा था। भीतर 'ब्लैक बोर्ड' पर खड़िया से जल्दी-जल्दी लिखने की खटपट आवाज़ आ रही थी। मैं बेहद डर गया। अब मुझे भी भूत पर विश्वास होने

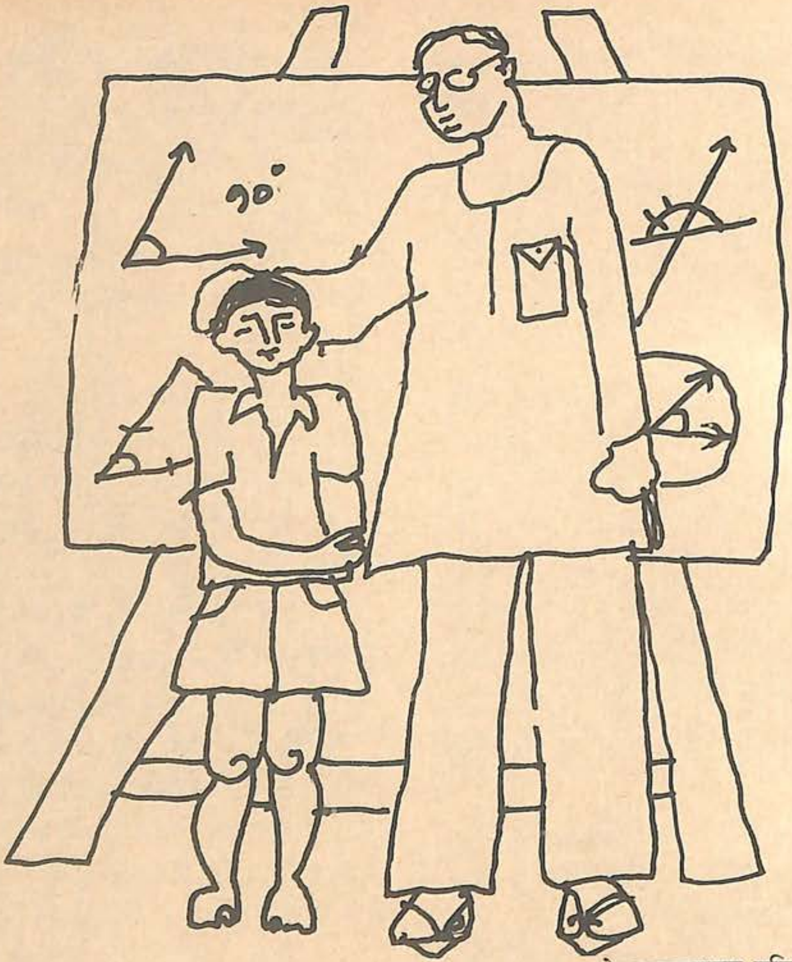

लगा। मैंने कहा, "टिल्लू भाग, अनिल का भूत 'पाइथागोरस' की थ्योरम कर रहा है।"

और हम दोनों सिर पर पांव रख कर भागे और होस्टल के कमरे में आकर हांफते-हांफते एक ही बिस्तर में दुबक गए। हमें काफी देर तक नींद नहीं आई।

अगले दिन क्लास में पहुंचे तो देखा, वहां मास्टरजी अपनी कुर्सी पर पहले से ही विराजमान थे। बोर्ड पर और दिनों की तरह उलटी-सीधी रेखाओं से 'पाइथागोरस' की थ्योरम भी की हुई है। जब सब लड़के क्लास में आ गए तो मास्टरजी ने उपस्थिति का रजिस्टर खोला और हाजिरी ली। हम व्यग्र थे कि वह कब रजिस्टर बंद करके अनिल के भूत से अपनी पराजय स्वीकार करते हैं। आखिरकार रजिस्टर भी बंद हुआ। वह अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए और उन्होंने बताया, "आज तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि रात अनिल का भूत पकड़ा गया।"

हम सब आश्चर्यवश सीटों से एक-एक फुट ऊपर उछल पड़े।

"कहां है?" सब लड़के एक स्वर में चिल्लाए।

"वह," मास्टर जी ने चंदू की ओर इशारा किया।

सब लड़के प्रश्नवाचक दृष्टि से चंदू की ओर देखने लगे। वह पिटा-सा, झेंपा-सा सिर नीचा किए बैठा था। ऐसा लगता था, जैसे मास्टर जी ने उसकी काफी मरम्मत कर दी हो।

अंत में मास्टरजी ने पूरा भेद भी खोल दिया कि किस प्रकार चंदू रात को चुपचाप उठ कर थ्योरम कर जाया करता था। उन्होंने बताया कि उसके पास से एक टार्च और एक किताब मिली। उस किताब में ज्योमेट्री के वे सारे सवाल हल किए हुए हैं, जो दसवीं के कोर्स में आते हैं। मास्टरजी ने रात स्वयं छिप कर चंदू की सारी करतूतें देखी थीं।

बाद में पता चला कि चंदू ने यह सारा नाटक इसलिए रचा था, जिससे इमली के पेड़ की पकी-पकी इमली वह अकेला ही मजे में खा सके और अन्य सब विद्यार्थी डर के मारे उस पेड़ से दूर ही रहें।

उस दिन से यह घटना चंदू की चिढ़ बन गई। लड़कों ने उसे ही 'अनिल का भूत' कहकर चिढ़ाना आरंभ कर दिया। अब सब लड़के समझ गए कि भूत कुछ नहीं होता, यह सिर्फ वहम का नाम है।

(प्रकाशन विभाग के सौजन्य से)

☐ **वीरकुमार अधीर**

सभी चित्र : अक्षत चराटे

खेल कागज का

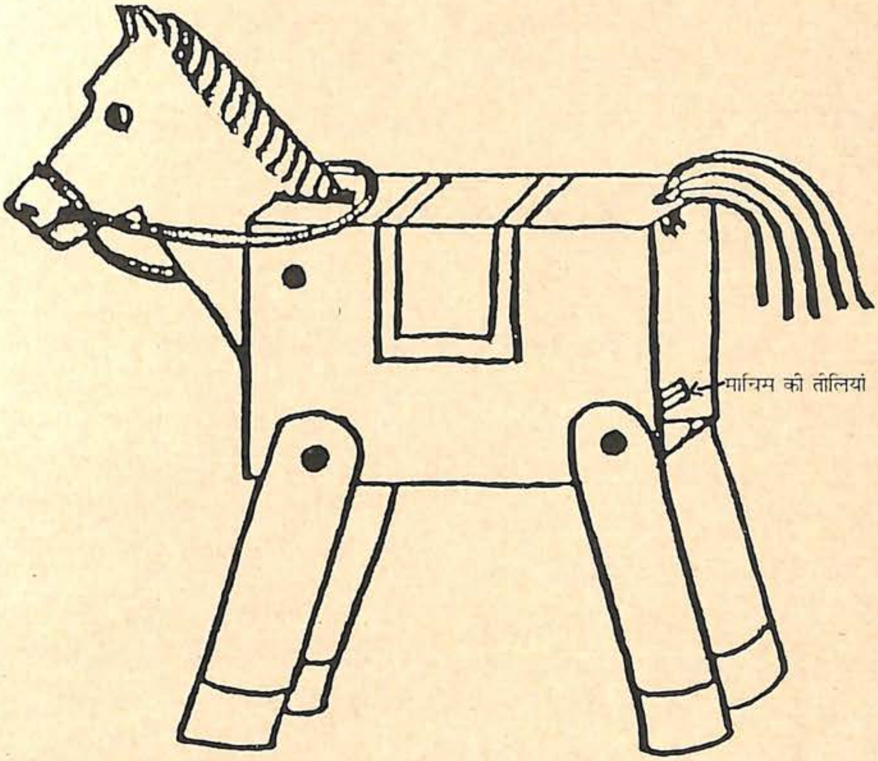

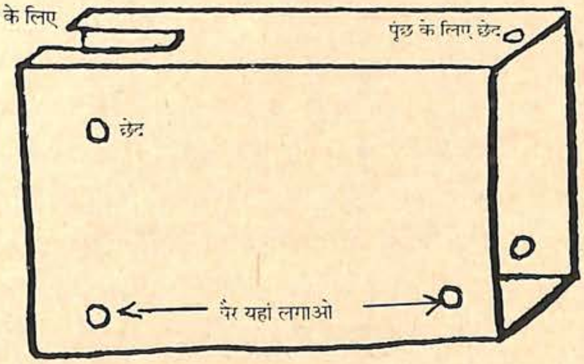

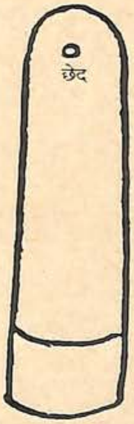

चल रे घोड़े टिक टिक...

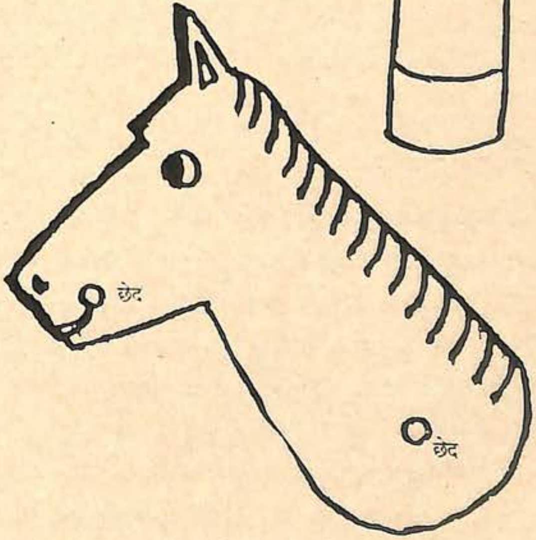

तुमने माचिस के खाली खोखे से कई ख़िलौने बनाए होंगे। आओ इन चित्रों को देखकर खाली खोखे, कार्डशीट तथा पुरानी ऊन आदि से घोड़ा बनाते हैं।

किसी मोटे कागज़ या कार्डशीट पर घोड़े के सिर तथा पैरों की आकृतियां काट लो। चित्र में दिखाए स्थानों पर इनमें छेद कर लो। ध्यान रहे कि छेद माचिस की तीली की गोलाई से अधिक बड़े न हों। अब इन आकृतियों को माचिस के खोखे यानी घोड़े के धड़ में माचिस की तीलियों से जोड़ दो। पुरानी ऊन या जूट से छोटी सी पूंछ बनाओ और पूंछ के स्थान पर लगा दो। चाहो तो धागे की लगाम बनाकर लगा दो। बस तुम्हारा घोड़ा तैयार!

गिजुभाई की कलम से..

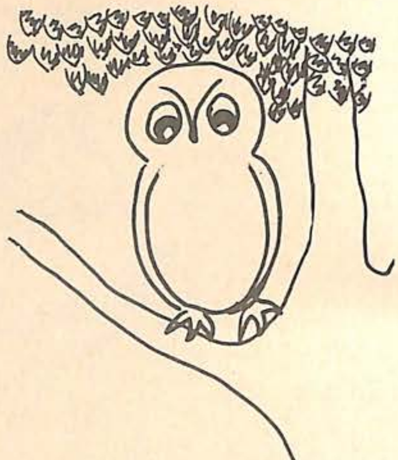

अंधविश्वास की शिक्षा

घर के छप्पर पर बैठा पण्डुक बोल रहा है।

मां कहती है, 'सुनते हो? हमारे छप्पर पर पण्डुक बोल रहा है। रोज़ रोज़ पण्डुक का बोलना अच्छा नहीं होता।'

पिताजी पत्थर मार कर पण्डुक को उड़ा देते हैं। छोटा बच्चा देखता रहता है।

गांव से लौटकर पिताजी कहते हैं, 'बस एक धरम धक्का ही लगा। मैं जानता ही था कि काम बनेगा नहीं, क्योंकि सामने एक विधवा मिल गई थी।'

रात पड़ी। खूसट बोलने लगा। मां बोली 'अररर! यह खूसट तो न जाने क्या बोल रहा है। पता नहीं, कल का दिन कैसा बीतेगा? लगता है, यह खूसट तो हमारे पीछे ही पड़ गया है।'

कुत्तों को भगाती हुई पड़ोसिन कह रही है, 'अरे, इन कुत्तों को तो देखो। ये किस बुरी तरह से रो रहे हैं। ज़रूर ही कोई अनहोनी होने वाली है।'

बुआजी बोली, 'आज तो यह तवा हंसा। ज़रूर ही कोई मेहमान आएंगे।'

रात ब्यालू के बाद गली की बहनें इकट्ठा होती हैं। वे नित-नई गप हांकती रहती हैं। 'ना, भैया! जहां ऐसे घेरे बने रहते हैं, उनमें तो बालकों को अपने पैर नहीं रखने देने चाहिए।' 'पता नहीं अब मेरा यह घर कैसा हो गया है। इसमें किसी का शरीर स्वस्थ रहता ही नहीं है।' 'इस केसर बहू की नजर तो बहुत की कड़ुई है। आज मैं अपने घर में बैठी खीर खा रही थी, तभी वह अचानक आ पहुंची। बोली, 'बहन! खीर तो बहुत अच्छी बनी है।' बस, इतना कह कर वह तो चली गई, पर उस रांड की नजर को क्या कहा जाए? मैं तो उलटियां कर-करके हैरान हो गई।'

घर में मां-बाप अपने बच्चों से कहते हैं, 'देखो, इस समय गधे का नाम मत लो।' 'अरे आज सवेरे-सवेरे तुमने इस निपानिया गांव का नाम कहां ले लिया! अब शाम तक तुम को रोटी नहीं मिलेगी।' 'सुनो रमेश! शाम के समय उत्तर की तरफ पांव रख कर क्यों सोए हो? उठ, खड़े हो जाओ।'

ये सब निरे अंधविश्वास हैं। कोरमकोर वहम हैं। अपने आस-पास और अपने बीच रहने वाले बालकों को हम हर घड़ी इन वहमों का ही पान कराते रहते है। ये वहम हमको अपने माता-पिता से मिले हैं। हम इन्हीं अंधविश्वासों अथवा वहमों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी, जाने-अनजाने, अपने बालकों में सींचते रहते हैं।

हमने अपने माता-पिता से पूछा, 'अगर कोई सांप हमारा रास्ता काट कर चला जाए तो हमको नुकसान क्यों होता है?' हमको जवाब मिला, 'तुम इसमें क्या समझो? अपने बड़े बूढ़े जो कह गए सो यों ही नहीं कह गए!'

बालक हमसे पूछता है, 'पैर हिलाने से मां क्यों मर जाती है?' जवाब में हम उससे कहते है, 'चुप रहो। बहुत अकल मत बघारो। तुम इतना भी नहीं समझते कि पैर नहीं हिलाने चाहिए!'

इस सबका नतीजा यह निकला कि हम अंधविश्वासी बन गए। आगे हमारे बालक भी अंधविश्वासी बनेंगे और उनके बालक भी अंधविश्वासी ही बनेंगे। यों, पीढ़ी-दर-पीढ़ी अंधविश्वास फैलता रहेगा।

अंधविश्वासी आदमी डरपोक होता है। 'दाहिनी आंख फड़की! हे भगवान! पता नहीं, अब क्या होगा?' 'देखो यह घी फर्श पर फैल गया! पता नहीं अब क्या मुसीबत खड़ी होगी?' 'सुनो, सियार रो रहे हैं कहीं आज गांव में सेंध तो नहीं न लगेगी?' 'अगर मैं रात में दही जमाऊंगी तो कहीं मेरी गाय सूख तो नहीं न जाएगी?' ये सारे अंधविश्वास मनुष्य के विचारों में घुले पड़े हैं।

मन में अंधविश्वास की बात आते ही अंधविश्वासी मन डर जाता है। किसी अमंगल की चिंता से वह कांप उठता है। भयभीत होकर पसीने से नहा लेता है। कुछ ही क्षणों की अपनी कल्पना में वह न जाने कितने दुखों का अनुभव कर लेता है।

अंधविश्वासी वह है जो मानकर चलता है। बिना प्रमाण मांगे ही हर किसी बात को मान लेता है। अंधविश्वासी को अपने अंधविश्वासों का त्याग करना चाहिए। जैसे, हम कहते हैं, 'याद रखो, अगर तुमने हनुमान जी को फूलों की माला नहीं पहनाई, तो वे तुम पर नाराज हो जाएंगे, तुम भूतनी को लपसी चढ़ाने की मन्नत नहीं मानोगी, तो भूतनी तुमको दुख देगी।' 'मैंने अपना चूल्हा ठण्डा नहीं किया था, इसलिए शीतला माता मुझ पर नाराज़ हो गई, और मेरे बेटे को चेचक निकल आई!' अंधविश्वासी आदमी इन सब बातों को सच मानेगा और कहेगा, 'हां, ये सब तो सच्ची बातें हैं।'

अंधविश्वासी मनुष्य का मतलब है, निर्मल तर्क बुद्धि को न मानने वाला आदमी। अंधविश्वासी आदमी कभी यह पूछता ही नहीं कि ऐसा क्यों होता है? वह कभी यह कहता ही नहीं कि मैं तो यह सब बात तभी मानूंगा, जब मुझ को इनका भरोसा हो जाएगा।

अविश्वासी मनुष्य यानी अशास्त्रीय मनवाला मनुष्य। वह कभी यह कहता ही नहीं कि 'आप कुछ भी क्यों न कहें, मुझको तो खुद ही इसकी छान-बीन कर लेनी होगी। जब तक बात मेरी समझ में नहीं आएगी, तब तक मैं तो तटस्थ रहना ही पसंद करूंगा।' अंधविश्वासी आदमी तो बिना जांच-पड़ताल के ही जादूगर के खेलों में मंत्र-तंत्र के दर्शन करता है, जबकि अंधविश्वासों से मुक्त आदमी समझ लेता है कि ये सब तो दवा के ज़ोर से या युक्ति-प्रयुक्ति से या हाथ की चालाकी से होने वाले काम हैं।

अंधविश्वासी मन यानी अंध श्रद्धावाला मन। इसी कारण अंधविश्वासी आदमी शास्त्र-वचन को अटल मानता है। वह देवों और परियों की बातों को न माननेवालों को नास्तिक समझता है, और भूत-प्रेत आदि की कहानियों का सही भेद जानने से इंकार करता है।

हम लोग अधिकतर अंधविश्वासी जीवन जी रहे हैं। आजकल के धर्म का एक बड़ा हिस्सा अंधविश्वास से प्रभावित है। पाखंडी लोग धर्म के नाम पर, अंधविश्वासी लोगों से अनुचित लाभ उठाते रहते हैं।

हमने अपने बड़ों-बूढों से कारण पूछे। हमको जवाब नहीं मिले। क्या अब हम स्वयं ही अपने अनेकानेक अंधविश्वासों के कारणों को जानना चाहेंगे? भले, अपने लिए न सही, पर क्या अपने बालकों के लिए हम कारणों की खोज करेंगे? अपने बालकों के प्रश्नों के उत्तर में क्या हम उनको कारण बताने का प्रयत्न करेंगे?

पहले हम स्वयं इस बात का भरोसा कर लें कि सारे अंधविश्वास एकदम मिथ्या हैं। निपानिया गांव है। रोज़ उसका नाम लेते रहने से हमको विश्वास हो जाएगा कि उसका नाम लेने से किसी का कोई नुकसान नहीं होता। खूसट एक पक्षी है। वह अपने लिए ही बोलता है। आंख फड़कने का कारण शरीर की कोई गड़बड़ी हो सकती है। यदि इस तरह हम अपने अंधविश्वासों की छान-बीन करेंगे तो हमको अपनी नासमझी पर खुद ही हंसी आएगी।

बालक हमसे बहुत-कुछ सीखते हैं। हम उनको जो बातें सिखाते हैं, उनकी तुलना में हम जिस तरह अपना जीवन बिताते हैं, उससे वे बहुत अधिक सीखते हैं। मुझमें जो अंधविश्वास आज मौजूद हैं, वे मुझको अपने विद्यालय से नहीं मिले। वे तो मेरे घर से, मेरे माता-पिता के अपने अंधविश्वासों से मिले हैं। क्या हम अपने बालकों को अंधविश्वास की शिक्षा देना चाहते हैं? क्या हम उनको डरपोक बनाना चाहते हैं? क्या हम उनको भोले भाव से सब कुछ सही मान लेने वाला बनाना चाहते हैं? क्या हम उनको शास्त्रीय दृष्टि से रहित और तर्क रहित बुद्धि वाला बनाना चाहते हैं।

यदि हमको यह सब नहीं करना है, तो हम स्वयं किसी भी अंधविश्वास को न मानें, और न किसी को अंधविश्वासी बनाएं।

('मां-बाप बनना कठिन हैं' से मौण्टीसरी बाल शिक्षण समिति, राजलदेसर के सौजन्य से। गुजराती से अनुवाद : काशिनाथ त्रिवेदी)

लटोरा

इस बार हम एक ऐसे पक्षी से परिचय प्राप्त करेंगे जिसे अंग्रेजी में कसाई पक्षी या बुचर बर्ड कहते हैं। यह नाम इसलिए पड़ा कि यह पक्षी जिन कीड़ों या छोटे जंतुओं को अपने भोजन के लिए पकड़ता है उन्हें कभी-कभी बबूल, खजूर या अन्य किसी पेड़ के कांटों की सूली पर चढ़ा देता है। इसे लटोरा या लहतोरा भी कहा जाता है।

भारत में लटोरे की तीन जातियां पाई जाती हैं—छोटा लटोरा, मलिट्या लटोरा और सफेद लटोरा। इन जातियों की आदतें अधिकतर एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं।

छोटा लटोरा और मलिट्या लटोरा प्रायः दिन में बिजली के तारों या किसी पेड़ पर बैठे रहते हैं और अपनी पैनी दृष्टि से ज़मीन पर चलने वाले कीड़ों या अन्य जंतुओं को खोजते रहते हैं। जैसे ही शिकार दिखाई पड़ता है ये झपटकर उसे पकड़ लेते हैं।

इनका शरीर सफेद और पंख तथा पूंछ काले होते हैं। सिर और आंखों पर एक काली लंबी पट्टी होती है, जिसके कारण ये किसी डाकू के समान दिखाई पड़ते हैं। छोटे लटोरे की पीठ का रंग गहरा कत्थई और मलिट्या लटोरे की पीठ का रंग नारंगी होता है। ये दोनों जातियां गौरैया से कुछ ही बड़ी होती हैं। सफेद लटोरा इन दोनों से कुछ बड़ा होता है। इसके पूरे शरीर का रंग सफेद और भूरा होता है—पूंछ और पंख को छोड़कर, जो काले होते हैं। इसके सिर और आंखों पर भी काली पट्टी होती है। लटोरा प्रायः शाम के झुटपुटे में अधिक सक्रिय होता है और सूखे मैदानों को अधिक पसंद करता है।

लटोरे की तीनों जातियां अन्य पक्षियों और जंतुओं की आवाज़ की नकल उतारने में बड़ी चतुर होती हैं। यदि कभी तुम्हें कुत्ते के पिल्ले की आवाज़ किसी ऐसे स्थान पर सुनाई पड़े जहां कोई पिल्ला न हो तो इधर-उधर नज़र दौड़ाओ, हो सकता है कोई लटोरा अपना मन बहला रहा हो।

विभिन्न प्रकार के कीड़े छिपकलियां, मेंढक तथा चूहे लटोरों का प्रिय भोजन हैं। आवश्यकता से अधिक भोजन मिलने पर लटोरे उसे कांटों पर चुभो कर रखते हैं। मेंढक के समान बड़ा शिकार मिलने पर उसे भी कांटों पर चुभो देते हैं ताकि उसे खाने में आसानी हो।

लटोरे पक्षी के नर और मादा में कोई अंतर नहीं होता है। इनका प्रजनन काल प्रायः अप्रैल से सितंबर तक होता है। लटोरे अपना घोंसला पेड़ पर जमीन से दस से पंद्रह फीट की ऊंचाई पर घास के तिनकों, ऊन, बालों आदि की सहायता से बनाते हैं। घोंसला प्याले के आकार का होता है। मादा तीन से छह अंडे देती है। अंडे सफेद होते हैं। इन पर हल्के कत्थई रंग के धब्बे होते हैं।

☐ अरविंद गुप्ते

पोस्टकार्ड के खंबे

प्रत्येक चीज़ का एक ढांचा होता है। मनुष्य का शरीर, मकान, पुल, जानवर, पेड़ सभी किसी-न किसी ढांचे पर टिके हैं जो उनका भार संभालता है। आओ पुराने पोस्टकार्डों से कुछ ढांचे बनाते हैं और उनके गुणधर्म देखते हैं।

सभी पोस्टकार्ड 14 सें.मी. लंबे और 9 सें.मी. चौड़े होते हैं। एक पोस्टकार्ड को मोड़कर गोल ऊंचा खंबा तैयार करो (चित्र-1)। अंदाज लगाओ कि यह खंबा कितना भार सह लेगा! खंबे पर धीरे-धीरे एक के ऊपर एक पुस्तकें रखो। पुस्तकों को बीचोंबीच रखना नहीं तो असंतुलित होकर गिर जाएंगी। 9 सें.मी. ऊंचा यह खंबा लगभग चार किलोग्राम भार सहन कर लेता है (चित्र-2)। है ना ताज्जुब की बात!

अब कुछ पोस्टकार्डों को अलग-अलग आकार में मोड़कर 9 सें.मी. ऊंचे खंबे बनाओ (चित्र-3)। अब देखो कि किस आकार का खंबा सबसे अधिक भार सह पाता है? और सोचो क्यों? अपने आसपास देखो कि किस तरह के खंबे सबसे अधिक प्रयोग में लाए जाते हैं।

कुछ और पोस्टकार्डों को अलग-अलग आकार में मोड़कर 14 सें.मी. ऊंचाई के खंबे बनाओ। देखो कौन से आकार का खंबा अधिक मज़बूत है (चित्र-4)। दो खंबे एक जैसे आकार के बनाओ, पर एक ऊंचा रखो और दूसरा छोटा। पता करो कौन-सा खंबा अधिक भार सहन कर सकेगा।

☐ अरविंद गुप्ता

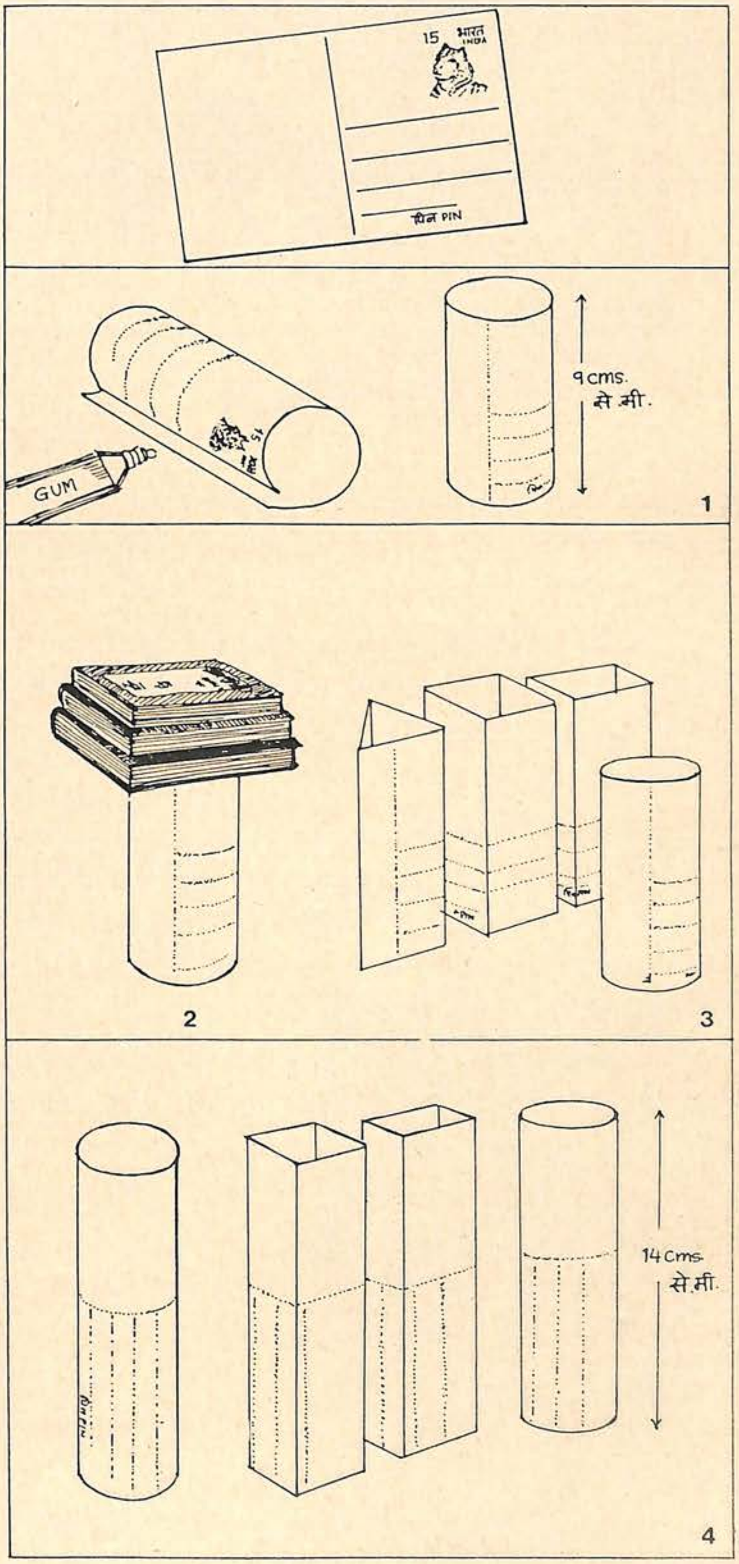

बंदर गोष्ठी

सुबह-सुबह गांव के किसान अपने खेतों की ओर निकल पड़े थे। सूरज अपनी रोशनी चारों ओर बिखेर रहा था। परिंदे चहचहा रहे थे। बंदरों की हूप-हूप की आवाज़ साफ सुनाई दे रही थी।

राजी और उसके दोस्त इन बंदरों के पीछे पड़े हुए थे। वे सभी मिलकर बंदरों की नकल करके और तरह-तरह की आवाज़ें निकालकर उन्हें चिढ़ा रहे थे।

ले बंदर रोटी, तेरी पूंछ मोटी!
बंदर-बंदर हूप, तेरी झोपड़ी में घूंस!

बंदरों को भी मज़ा आ रहा था। वे एक मकान की छत से दूसरे मकान की छत पर लंबी-लंबी छलांगें भर रहे थे। राजी के दोस्त युनूस ने पत्थर उठाया और लगाया एक बंदर पर निशाना। बंदर तो दांत दिखाकर बच निकला, पर पत्थर जाकर गिरा रामू की छत पर! पत्थर के गिरने से छत के कवेलू फूट गए। डांट पड़ने के डर से सारे बच्चे रफूचक्कर हो गए।

राजी के आनंद भैया सुबह-सुबह तफरी करके गांव की ओर लौट रहे थे। उनकी निगाह बरगद के नीचे खड़ी इस टोली पर पड़ी। राजी, युनूस, विष्णु, ममता, शाहिदा, गोविंद, घनु और बलवंत सभी मौजूद थे वहां!

आनंद को देखकर बच्चे सकपका गए। आनंद को भी लगा कि कुछ गड़बड़ घोटाला करके आए हैं। आनंद ने पूछा, तो घनु ने बताया, "भैया हम बंदरों को देख रहे थे कि युनूस ने एक बंदर पर पत्थर से निशाना लगाया। बंदर तो भाग गया, पर रामू की छत के कवेलू फूट गए।"

आनंद ने युनूस के सिर पर एक हल्की-सी चपत लगाई, "शैतान कहीं के! अगर पत्थर बंदर को लगता तो क्या उसे चोट नहीं पहुंचती! और फिर पत्थर तो किसी को भी लग सकता था।"

विष्णु बोला, "भैया हमें तो मज़ा आता है इन बंदरों के करतब देखने में!"

बरगद की लंबी-लंबी लटकती जड़ों से झूलते हुए बलवंत कह रहा था, "काश! मैं भी बंदर होता तो एक डाल से दूसरी डाल पर छलांग भरता, कितना मज़ा आता!"

ममता ने मुंह बनाते हुए बलवंत को चिड़ाया, "तुम तो हो ही बंदर।"

बलवंत जड़ छोड़ ममता को पकड़ने लपका!

आनंद हाल ही में अपनी पढ़ाई खत्म करके लौटा था। उसे इन छोटे दोस्तों के साथ बात करने में खूब आनंद आता। उसे अपना बचपन याद आने लगता।

गोविंद बोला, "आनंद भैया बंदरों के बारे में कुछ बताइए न!"

बच्चा टोली एक साथ बोल पड़ी, "हां, भैया बड़ा मज़ा आएगा!"

आनंद बोला, "पर एक शर्त है, तुम सब भी यहां-वहां घूमते रहते हो। तुमने भी बंदरों को देखा है। इसलिए जो तुमने देखा है वह भी बताना।"

'बंदर गोष्ठी' के लिए दिन, समय और स्थान तय किया गया। दिन रविवार, समय चार बजे का और स्थान वहीं बरगद के नीचे।

रविवार अभी तीन दिन दूर था। सभी बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रहे थे। कुछ ने इन तीन दिनों में बंदरों के बारे में और अवलोकन किए।

रविवार को सभी ठीक समय पर बरगद के नीचे इकट्ठे हो गए।

'बंदर गोष्ठी' शुरू हुई। सभी कुछ न कुछ कहने को कुलबुला रहे थे। सभी ने कुछ न कुछ नया पता किया था बंदरों के बारे में।

आनंद ने आंख का इशारा किया और विष्णु शुरू हो गया, "बंदर झुंड में पाए जाते हैं और हर झुंड का एक मुखिया होता है। यह बड़ा और ताकतवर भी होता है।" घनु ने चुटकी ली, "फिर तो यह भी अपने गांव के मुखिया की तरह अपनी-अपनी ही धकाता होगा।" घनु की बात सुनकर सब हंस पड़े।

आनंद ने बताया, "जब भी झुंड पर कोई खतरा होता है, तो मुखिया न केवल सबको सावधान करता है बल्कि मदद भी करता है।"

ममता ने अपनी उंगली उठाई, "एक झुंड में बंदरों की संख्या कितनी होती होगी?"

जवाब दिया विष्णु ने, "अभी गांव में जो झुंड आया हुआ है, उसमें तो लगभग बीस बंदर हैं।"

आनंद ने बात आगे बढ़ाई, "झुंड में बंदरों की संख्या निश्चित नहीं होती है। पर मोटे रूप में कहा जा सकता है कि एक झुंड में आठ-दस से लेकर पचास से साठ तक बंदर हो सकते हैं।"

अब युनूस की बारी थी। युनूस ने बताया कि, "बंदर का मुंह, पैर के तलवे, हाथ के पंजे काले होते हैं। पूरा शरीर दो-तीन इंच लंबे बालों के आवरण से ढका होता है। पूंछ होती है कोई एक-डेढ़ मीटर लंबी।"

शाहिदा ने पूछा, "लेकिन इनका नाम क्या होता है भला! गांव के लोग तो इन्हें 'काले मुंह के बंदर' कहते हैं।"

"'बंदर मामा' भी तो कहते हैं।" राजी बोली।

आनंद ने बताया, "हां भई, अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग नाम से पुकारा जाता है। और फिर कोई एक तरह के बंदर तो नहीं हैं न! लगभग 130 प्रकार के बंदर पाए जाते हैं। इनके व्यवहार और रहन-सहन में भी काफी अंतर होता है।"

घनु बोला, "अब मेरी भी सुनो! मादा बंदर अपने बच्चों की देखभाल बड़े ही अच्छे तरीके से करती है। एक जगह से जब दूसरी जगह जाती है तो अपनी छाती से चिपकाए फिरती है।"

"कभी-कभी मादा बंदर बच्चा जनने के बाद ऐसी स्थिति में नहीं होती कि वह अपने बच्चे को संभाल सके।" आनंद ने कहा।

"तो... तो फिर क्या होता है?" राजी ने सिर खुजलाते हुए पूछा।

"दरअसल ऐसी स्थिति में उसी झुंड की कोई अन्य मादा बंदर उस बच्चे की देखभाल करती है। उसे अपना दूध पिलाती है। जब बच्चे की मां स्वस्थ हो जाती है तो बच्चे को खुद संभालने लगती है।"

चर्चा चल रही थी कि पेड़ पर कुछ हलचल-सी मची।

"अरे उस डगाल पर दो बंदर मस्ती कर रहे हैं।" विष्णु बोला।

सभी की निगाहें उसी डगाल पर अटक गईं। दोनों बंदर भी बंदरों के बच्चे से लग रहे थे। दोनों तरह-तरह के करतब कर रहे थे। कभी एक दूसरे से हाथ मिलाते, तो कभी पूंछ के सहारे डगाल से झूल जाते। कभी एक दूसरे को चपत मारने लगते।

"क्या ये बंदर जन्म लेते ही ऐसे करतब दिखाना शुरू कर देते हैं!" शाहिदा के दिमाग में सवाल कुलबुलाया।

"नहीं! जन्म लेने के एक माह बाद तक तो बच्चा चल-फिर नहीं सकता। इस दौरान वह मां के पास ही रहता है।" आनंद कह रहा था, "लगभग दो माह की उम्र में आते-आते बच्चा सक्रिय हो जाता है। फिर भी वह अपनी मां के आसपास ही उछलकूद करता है, दूर नहीं जाता। पांच माह से एक साल की उम्र का बंदर मां से दूर जाकर अन्य बच्चों के साथ खेलता है। लगभग सवा साल का बंदर अपना जीवन स्वतंत्र रूप से जीने लगता है। बच्चा अपनी मां के लिए आकर्षण का केंद्र होता है। वह अपनी मां के साथ खूब मस्ती करता है, कभी कंधे पर बैठता है तो कभी उसके बाल खींचता है। छह-सात साल की उम्र का नर बंदर वयस्क बंदर होता है। मादा बंदर लगभग चार साल की उम्र में वयस्क होती है।"

"अच्छा बंदर खाते क्या हैं?" बलवंत ने पूछा।

"बंदरों का क्या जो भी मिला खा लिया!" ममता बोली, "अभी दो-तीन पहले हमारे पड़ोस में पिछवाड़े खाना बन रहा था कि एक बंदर आया और रोटियां उठाकर भाग गया।"

"हां ममता, तुम ठीक कह रही हो! वैसे तो बंदर शाकाहारी होते हैं और फल-फूल, पत्तियां खाते हैं। भूख लगने पर जो भी मिला खा लेते हैं।" आनंद ने कहा।

"अच्छा भैया ये बंदर एक-दूसरे के शरीर से निकालकर क्या खाते हैं?"

शाहिदा ने अपनी जिज्ञासा प्रकट की।

"अरे जूं, जुंए और क्या?" आनंद के बोलने के पहले ही ममता बोल उठी।

आनंद मुस्कराया, "किसी और को कुछ समझ में आता है क्या खाते होंगे बंदर एक-दूसरे के शरीर से निकालकर!"

बच्चा टोली सोच में पड़ गई।

"दरअसल ये शरीर पर जमी पसीने की पपड़ी खरोंच कर खाते हैं।' आनंद बोला।

"पर पसीने की पपड़ी खाने से भला क्या पेट भरता है?" ममता बोली।

"तो उनको खारापन अच्छा लगता होगा।" यूनूस ने अपना अनुमान बताया।

"युनूस ठीक कह रहे हो! शरीर में लवण (नमक) की कमी को पूरा करने के लिए वे ऐसा करते हैं। पसीने के साथ निकला लवण शरीर पर पपड़ी के रूप में जम जाता है। बंदर उसे ही खरोंच कर खाते रहते हैं। लवण की पूर्ति के लिए ये कभी-कभी राख या हड्डियां भी खाते हैं, क्योंकि इनमें उन्हें ये लवण मिल जाते हैं।" आनंद ने कहा।

घनु ने पूछा, "भैया हम तो बंदरों को पेड़ पर ही देखते हैं। क्या उनका घर भी पेड़ पर ही होता है?"

"और क्या सभी तरह के बंदर पेड़ पर ही रहते हैं?" बलवंत ने अपना सवाल जोड़ा।

"आमतौर पर तो बंदर पेड़ों पर ही रहते हैं। फिर भी उनका निवास ज़रूरत के हिसाब से तय होता है। वास्तव में पेड़ों पर रहने की वजह है इनके पास सुरक्षा का साधन न होना। इसी कारण दुश्मनों से बचने के लिए ये पेड़ों पर रहते हैं।" आनंद बोला।

गोविंद बड़ी देर से चुप था, शायद वह कुछ सोच रहा था। माथे पर सल डालते हुए बोला, "भैया एक बात मेरे मन में कुलबुला रही है कि बंदर रात को झाड़ पर सोते हैं तो गिरते क्यों नहीं?"

"हूं, सवाल टेड़ा है। सोचो जरा तुम लोग भी सोचो!" आनंद बोला।

पूरी बच्चा टोली सोचने की मुद्रा में डूब गई। थोड़ी देर तक खामोशी छाई रही।

"अच्छा सुनो," आनंद ने चुप्पी तोड़ी। "पहली बात तो यह कि बंदर बैठे-बैठे ही नींद निकालते हैं। हमारी तरह लेटते नहीं हैं। सोते समय उनके पैर भी विश्राम अवस्था में नहीं होते हैं। तीसरी बात यह कि उनके कूल्हों पर विशेष प्रकार की गद्देनुमा रचना होती है। इन रचनाओं में खून की नलियां तथा संवेदी अंग भी नहीं होते हैं। इन गद्देनुमा कूल्हों की वजह से बंदरों को बैठने में आसानी होती है। अपने कूल्हों को पेड़ की किसी शाखा पर जमाकर बैठ जाते हैं। एक बात और है कि बंदर बड़े चौकन्ने होते हैं थोड़ी-सी आहट पाते ही वे जाग जाते हैं।"

बलवंत बोला, "शायद अपने बचाव के लिए ही रात को बंदर पेड़ की

सबसे ऊंची शाखाओं पर रहते हैं।"

"पर बंदरों को किन से डर लगता है भला! कौन हैं उनके दुश्मन।" शाहिदा ने चिंता व्यक्त की।

"शेर, जंगली कुत्ते, भेड़िए, अजगर या अन्य मांस खाने वाले बड़े जंतु। और गांव में तो कुत्ते ही बंदरों के पीछे पड़े रहते हैं।" आनंद ने कहा, "और फिर सबसे बड़ा दुश्मन तो मनुष्य है।"

"वह कैसे?" राजी ने थोड़े आश्चर्य से पूछा।

"अरे तुमने देखा नहीं! मदारी बंदरों को पकड़ कर ले आते हैं और बस नचाते रहते हैं लोगों के सामने। उन्हें तरह-तरह के करतब सिखाते हैं और पैसा कमाते हैं। मदारी कहता है, सलाम करो तो बंदर सलाम करता है। मदारी पूछता है कि साहब कुर्सी पर कैसे बैठते हैं तो वह बैठकर दिखाता है। जब बंदर से पूछा जाता है कि नई दुल्हन घूंघट कैसे निकालती है तो वह दुपट्टे को सिर पर डालकर घूंघट निकालता है।" बलवंत ने एक्टिंग करके बताया।

बलवंत की एक्टिंग देखकर बच्चा टोली को मज़ा आ गया।

आनंद बोला, "सबसे अधिक चिंता की बात तो यह है कि गत साठ-सत्तर सालों से प्रयोगशालाओं में प्रयोग करने के लिए इनकी बलि चढ़ाई जाती रही है। पिछले बीस वर्षों में हमारे देश से करोड़ से भी ज़्यादा बंदरों को पकड़कर दूसरे देशों केलिए निर्यात किया गया है। 1977 में भारत सरकार ने बंदरों के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था। इस बात पर भी रोक लगाई गई थी कि इनको पकड़कर नहीं रखा जाएगा।"

"पर स्थिति तो शायद जैसे की तैसी है।" राजी बोली।

"हां, चोरी छुपे निर्यात तो अभी भी होता है। इसी कारण से हमारे देश में बंदरों की कई जातियां खत्म होने के कगार पर हैं। जंगलों की बेरहमी से कटाई के कारण भी इनके रहवास पर काफी असर पड़ा है।" आनंद बोला।

तभी हूप-हूप की आवाज़ ने उन सबका ध्यान बंटाया। बंदरों का झुंड दौड़ता हुआ पेड़ों पर चढ़ गया। सबने देखा गांव के कुछ कुत्ते उन्हें खदेड़ रहे थे। अंधेरा घिर आया था। सभी उठ खड़े हुए। बंदर गोष्ठी समाप्त हुई।

☐ **कालूराम शर्मा**

आवरण, पिछला भीतरी आवरण व 'बंदर गोष्ठी' लेख में प्रकाशित चित्र सौजन्य सेंचुरी मैगज़ीन व द प्रायमेट (टाईम/लाइफ)।

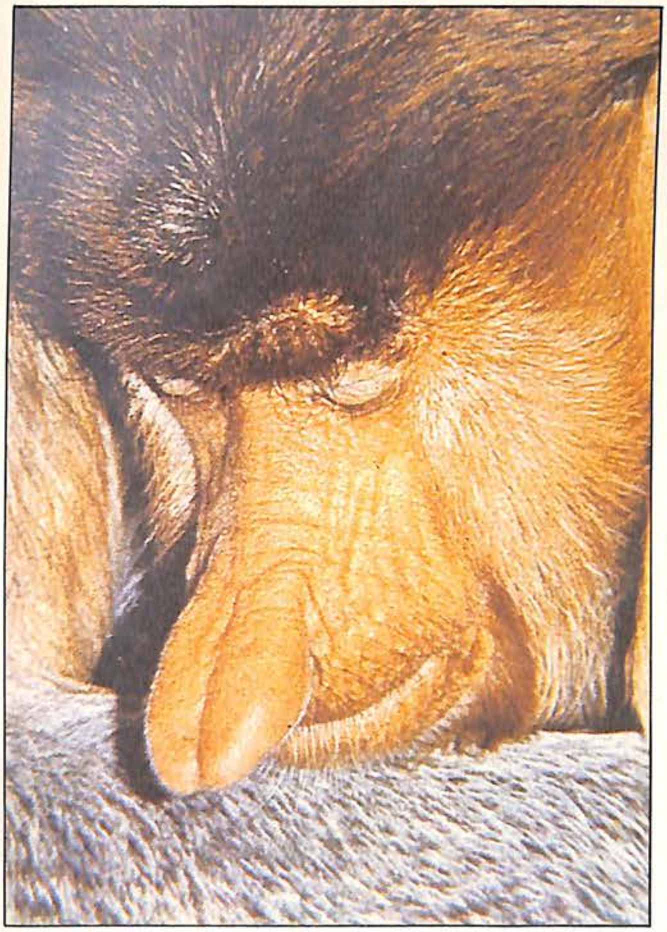

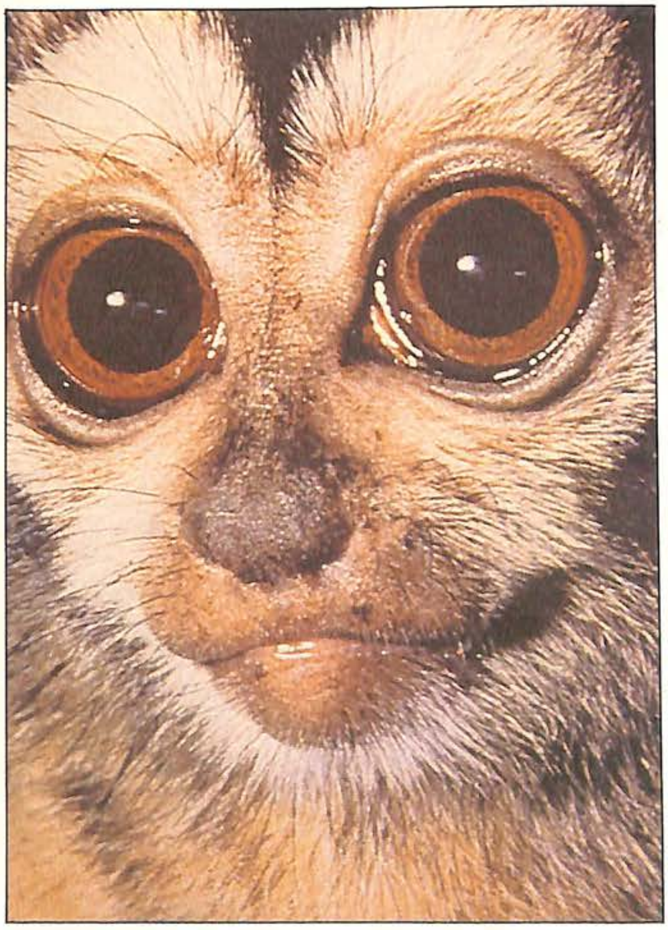
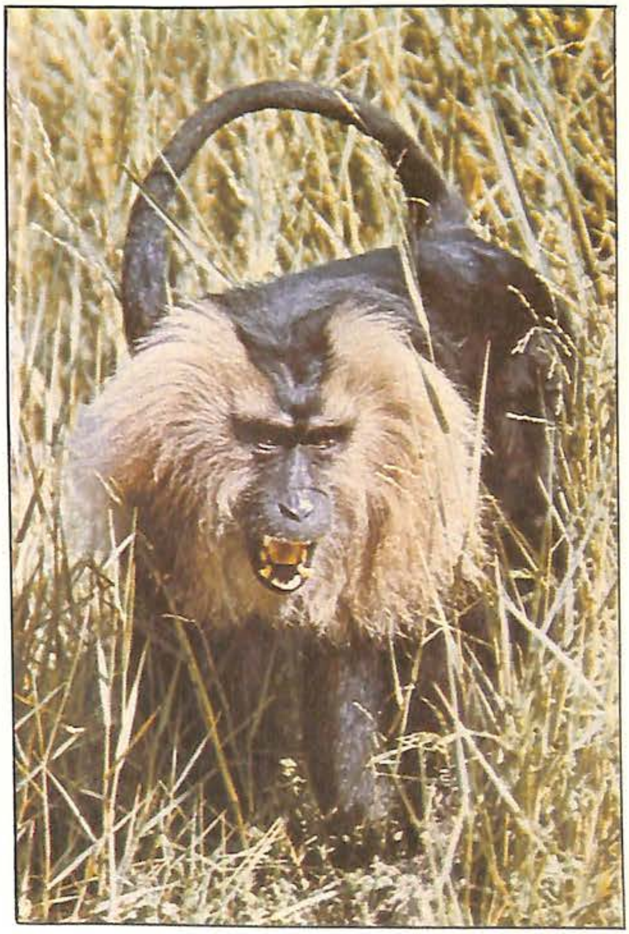

चकमक

पंजीयन क्रमांक 1317/सी/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्टार द्वारा पंजीकृत।
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/89

बिट्टू, चंडीगढ़

एकलव्य के लिए विनोद रायना द्वारा प्रकाशित।
कंपोज़र्स - अभिषेक। मुद्रक - भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल।